



मदुरैल पत्रिका

अंक 51

मार्च 2023



महात्मा गांधी संग्रहालय, मदुरै

दक्षिण रेलवे, मदुरै मंडल
राजभाषा अनुभाग द्वारा प्रकाशित

संरक्षक श्री प.अनंत मंडल रेल प्रबंधक	अनुक्रमणिका
मार्गदर्शक एवं सलाहकार डॉ.राजेश चंद्रन उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक	मंडल रेल प्रबंधक का संदेश उमुराधि एवं वमंपरिप्र का संदेश संपादकीय 1. कोविड-19 महामारी के दौरान भारतीय रेल की भूमिका ..ए.श्रीनिवासन, राधि/मदुरै 2. 2023 - बाजरा का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष ..एस. बालसुब्रमणियन, सेनि स्टेमा, मदुरै
संपादक श्री ए.श्रीनिवासन राजभाषा अधिकारी	3. जीवन शैली एवं स्वास्थ्य .. मीनाक्षी सुंदर, वलि, काशा, मदुरै 4. देश की आत्मनिर्भरता में राष्ट्रभाषा का योगदान ...ए.जी. राधा कृष्णा भारती, मुकाधी, साशा, मदुरै
उप संपादक सुश्री एल.मुत्तुलक्ष्मी, वरि.अनुवादक श्री एस.श्रीनिवासन, वरि.अनुवादक	5. साझेदारी ..सुरेंद्र पासवान, स्टेधी/विरुदुनगर 6. दुनिया की सबसे शक्तिशाली भाषाएँ ..एल.मुत्तुलक्ष्मी, वअनु, मदुरै 7. First Women..... in India ... एस.गणपति, मुकाधी/याँशा, 8. सोच ..विनय कुमार चौरसिया, वलि, संकर्म शाखा, मदुरै 9. स्वाभिमानी औरत की कहानी ..विनय कुमार चौरसिया, वलि, संकर्म शाखा, मदुरै
टंकण एवं प्रस्तुति सुश्री बी.वेण्माल, मुख्य टंकक	10. राष्ट्रीय एकता का महत्व ..अजय कुमार मीना, वलि, बिजली शाखा, मदुरै
अन्य सहायता श्री आर.सैदिल कुमार हिंदी विभाग(आवरण पृष्ठ एवं अभिकल्प)	11. लोह पथ गामिनी - रेल: रेलयात्रा ..अजय कुमार मीना, वलि, बिजली शाखा, मदुरै 12. भाषा अनेक भारत एक ..श्री वरदराजन, वअनुइंजी/याँत्रिक शाखा 13. पिता की भाषा ..विनय कुमार चौरसिया ,वरिष्ठ लिपिक, संकर्म शाखा, 14. अजंता-एलोरा की गुफाएँ, भारत श्री एस.श्रीनिवासन, वअनु, मदुरै 15. 'संगीत कलानिधि' एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी ...श्रीमती बी.वेनमाल, मुख्य टंकक, हिंदी अनुभाग
इस पत्रिका में प्रकाशित सामग्रियों के विचार लेखकों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं है कि संपादक इनसे सहमत हो।	16. भाषा की जानकारी ...श्री एस.प्रिंस डेविड जयसिंह, काधी, काशा, मदुरै

संपर्क - राजभाषा अनुभाग, मंडल कार्यालय, दक्षिण रेलवे, मदुरै तमिलनाडु - 625016
फोन - 72045



भारत सरकार GOVERNMENT OF INDIA

रेल मंत्रालय Ministry of Railways

दक्षिण रेलवे Southern Railway

प.अनंत P.ANANTH

मंडल रेल प्रबंधक

Divisional Railway Manager

मंडल कार्यालय Divisional Office,

मदुरै मंडल Madurai division,

मदुरै Madurai – 625 016.

Phone/Fax: 0452-2308000

संदेश

रेल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में सृजनात्मकता लाने में राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं की अहम् भूमिका होती है। ये पत्रिकाएं देश के विभिन्न भागों के बीच एक संवाद सेतु का निर्माण करती हैं।

हिंदी एक वैज्ञानिक और संपन्न भाषा है। सम्पूर्ण देश को एक सूत्र में बांधकर रखने में हिंदी का महत्वपूर्ण योगदान है।

राजभाषा अनुभाग द्वारा प्रकाशित होने वाली 'मदुरैल पत्रिका' का यह अंक कर्मचारियों की लेखन कला को प्रेरित करती है।

मुझे प्रसन्नता है कि वर्ष 2022-23 के 'मदुरैल पत्रिका' का दूसरा अंक प्रकाशित हो रहा है। मैं संपादक मंडल के अलावे पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी कर्मियों को बधाई देता हूँ जिनके सार्थक प्रयास से पत्रिका का प्रकाशन निरंतर संभव हो पा रहा है।

आशा है कि आगे भी, अधिक संख्या में सभी अधिकारी व कर्मचारी, हिंदी में लिखना शुरू करेंगे और इस गृह पत्रिका को सफलतम बनाएंगे।

शुभकामनाओं के साथ।

प.अनंत
24/03/2023



भारत सरकार GOVERNMENT OF INDIA

रेल मंत्रालय Ministry of Railways

दक्षिण रेलवे Southern Railway

डॉ राजेश चंद्रन Dr.Rajesh Chandran

उमुराधि एवं वरिमंपरिप्र

Dy.CRA & Sr.DOM/MDU

मंडल कार्यालय Divisional Office,

मदुरै मंडल Madurai division,

मदुरै Madurai – 625 016.

संदेश

मदुरैल पत्रिका, मदुरै मंडल की गृह पत्रिका है। मंडल के सभी अधिकारी और कर्मचारी से हम लेख कविता, निबंध आदि का निमंत्रण करते हैं और वे भी इसमें लिखकर राजभाषा के प्रचार प्रसार के राष्ट्रीय कार्य में जुड़ जाते हैं।

राजभाषा नीति का प्रचार प्रसार एक राष्ट्रीय कार्य है और इसमें भाग लेने में हमें गर्व होना चाहिए।

इस अंक के सभी लेखक, कवि, योगदान दिए सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। आग्रह करता हूँ कि अपने साथियों को भी लिखने को प्रोत्साहित करें।

शुभकामनाओं के साथ,

(राजेश चंद्रन)



भारत सरकार GOVERNMENT OF INDIA

रेल मंत्रालय Ministry of Railways

दक्षिण रेलवे Southern Railway

ए.श्रीनिवासन A.Srinivasan

राजभाषा अधिकारी Rajbhasha Adhikari

मदुरै Madurai

मंडल कार्यालय Divisional Office

मदुरै मंडल Madurai division,

मदुरै Madurai – 625 016.

संपादक की कलम से,

आज हिंदी विश्वभाषा इसलिए बन पाई है क्योंकि वह अपनी बोलियों और दूसरी भाषाओं से प्रेरणा ग्रहण करती रही है। इसलिए वह नीर भरी नदी बन पाई है। कबीर जब 'भाषा बहता नीर' कहते हैं तो उसका निहितार्थ यही है कि भाषा प्रवाहमयी होती है।

यह पत्रिका गृहमंत्रालय के वेबसाइट पर अपलोड की जाती है। पत्रिका के माध्यम से हम अपने क्षेत्र की संस्कृति, यहां के रहन-सहन तथा विचार से देश के अन्य क्षेत्र के लोगों को भी अवगत करा पाते हैं। इससे आपसी समझ का विकास होता है।

छमाही प्रकाशन चुनौतीपूर्ण था लेकिन अनुभाग के कर्मियों की जीवंतता और उनके कार्य के प्रति समर्पण के फलस्वरूप इसका प्रकाशन संभव हो पाया। हमारा हमेशा यह प्रयास रहता है कि पत्रिका सुरुचिपूर्ण हो तथा हिंदी भाषा-साहित्य व तकनीकी जानकारी से परिपूर्ण हो।

इस अंक से संबंधित अपने विचार से हमें अवश्य अवगत कराएं। आपके बहुमूल्य विचारों-सुझावों से हम प्रगति के पथ पर निरंतर आगे बढ़ते रहेंगे।

अगले अंक के माध्यम से मिलने तक आपका,

(ए.श्रीनिवासन)

कोविड-19 महामारी के दौरान भारतीय रेल की भूमिका

भूमिका

कहाँ से आया? कितनी शक्तिशाली है? कब चला जाएगा? वहाँ इतनों को मारा, यहाँ इतनों को मारा की कहानी रोज सुनाई पड़ता था। मुश्किलों से डटकर रहा भारत। भारतीय रेल ने भारत सरकार के साथ कंधे-से-कंधा मिलाया। प्रधानमंत्री, रामसेतु बनाने जैसे काम कोविड-19 महामारी विरुद्ध कर रहे तो रेलवे हनुमान की तरह साथ दिया, साथ रहा। आखिर भारत में कोविड-19 महामारी हारी तो इसमें भारतीय रेल की अहम् भूमिका रही। इसे विस्तार से देखेंगे।

अगर चुनौतियाँ हैं तो होंगे समाधान भी

भारतीय रेल के कर्मचारियों में, अधिकारियों में, नेताओं में यही विचार रहा। *‘भारतीय रेल कभी युद्धकाल में भी नहीं रुकी। कृपया परिस्थितियों की गम्भीरता समझिए, घर में ही रहिए’* के आह्वान सुनकर भारतीय रेल से बढ़कर भारतीयों को महत्व देकर, उनको बचाने के लिए, जनता के हित में, संगठन के नुकसान की परवाह किए बिना इतिहास में पहली बार यात्री-सेवाओं को बंद किया। इससे महामारी कोविड-19 को भी बहुत हद तक भारत में प्रवेश करने से रोक किया। वित्त-हानि चुनौती है तो उसका समाधान भी हमने ढूँढ़ लिया...

मालगाड़ियों का परिचालन

आम लोगों के लिए दैनिक आवश्यकताओं की सामग्री उपलब्ध होती रहे, इसके लिए मालगाड़ियों का परिचालन पूर्ववत जारी रहा। भारतीय रेल ने सुनिश्चित किया कि तालाबंदी के दौरान पूरे देश में दवाएँ, चिकित्सा-साधन, फल, सब्ज़ियाँ, दूध, कोयला, पेट्रोलियम उत्पाद, उर्वरक, पोस्टल बैग, जिप्सम, सीमेंट, खाद्यान्नकंटेनर, आदि अत्यावश्यक वस्तुओं की आपूर्ति में कोई कमी नहीं होनी है। इन सबके लिए माल गाड़ियों का परिचालन करता रहा। कृषि उत्पाद को समय पर पहुँचाने के लिए समय-सारणी के अनुसार पार्सल ट्रेन चलाई जा रही थीं जिससे किसान भी लाभान्वित हो रहे थे। अनगिनत पार्सल ट्रेनों का संचालन देश के हर कोने में किया जा रहा था ताकि आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति हो। भारतीय रेल के कर्मचारी चौबीसों घंटे विभिन्न गुड्स-शेड, स्टेशनों और नियंत्रण कार्यालयों में काम करते रहे ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि पूरे देश में आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति में कोई दुष्प्रभाव न हो। पार्सल बुकिंग के लिए रेलवे ने फोन नंबर दिए और प्रणाली को बहुत सरल किया।

स्वचालित रोलिंग स्टॉक मॉनिटरिंग सिस्टम

स्वचालित रोलिंग स्टॉक मॉनिटरिंग सिस्टम के उपयोग से न्यूनतम कर्मचारियों की संख्या में सुरक्षित मालगाड़ी संचालन सुनिश्चित किया गया। इससे अगरतला, त्रिपुरा, डिब्रूगढ़, नागालैंड, मेघालय, आदि जगहों के लिए समय-सारणी के अनुसार पार्सल गाड़ियाँ चलाई गईं। 'दूध दुरंतो' जैसे विशेष मालगाड़ियों को भी संचालित किया गया था।

मानवतावादी प्रयास

प्रवासी श्रमिकों को जो देश के विभिन्न स्थान पर फंस गये, जिनके लिए कोविड-19 महामारी के कारण न तो काम है, न ही खाना। इन सबसे बढ़कर अपने परिवार और रिश्तेदारों की चिंता जो सुदूर प्रदेश में है। वे अपने शारीरिक और मानसिक दुख को दूर करने के लिए 800 या 900 किमी को भी पैदल जाने के लिए तैयार रहे। भारतीय रेल अपनी चिंता से बढ़कर इनकी चिंता की। राज्य सरकारों से संपर्क स्थापित कर मुफ्त में उन प्रवासी श्रमिकों को अपना-अपना स्थान पहुँचाया। श्रमिक स्पेशल ट्रेन से लौटे प्रवासियों के चेहरों पर मुस्कान देखकर भारतीय रेल के कर्मचारीगण बहुत ही तृप्त हुए थे।

ये श्रमिक ट्रेनें राज्य सरकार की माँग पर चलाई जा रही थीं। रेलवे को राज्य सरकार, यात्रियों की सूची दे रही थी। भारतीय रेल ने बताया कि जिस राज्य को जितनी ट्रेनें चाहिए हम उन्हें उतनी ट्रेनें उपलब्ध कराएँगे।

कोरोना वायरस महामारी को देखते हुए भारतीय रेल ने हरी सब्जियों और फलों को बेचने के लिए सब्जी और फल विक्रेताओं के उपयोग के लिए स्टेशन परिसर में खाली भूमि का उपयोग करने की अनुमति दी थी।

रोटी, कपड़ा और मकान

कपड़ा और मकान के बिना भी कोई जी सकता है पर रोटी के बिना कैसे जिएगा? रेलवे ने अपने सौहार्दभाव से, करुणा से ज़रूरतमंद सबको यथाशक्ति खाना खिलाने का फैसला किया। रेलवे स्टेशनों के आसपास के क्षेत्रों और उसके नज़दीकी क्षेत्रों के ज़रूरतमंद लोगों की भोजन संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आरपीएफ, जीआरपी, वाणिज्यिक विभाग, राज्य सरकार, जिला प्रशासन और गैर सरकारी संगठनों के सहयोग से फैसे हुए प्रवासी व्यक्तियों, दिहाड़ी मज़दूरों, बच्चों, कुलियों, बेघरों, गरीबों और अन्य बाधितों को भोजन उपलब्ध कराया। भोजन का वितरण किया गया था। प्रतिदिन करोड़ों पानी की बोतलें निःशुल्क उपलब्ध करवाईं। लाइसेंसधारी कुली पोर्टर, जो तालाबंदी की स्थिति में अपनी आय का स्रोत खो चुके थे उनकी मदद के लिए उदारता के साथ भारतीय रेल ने व्यवहार किया।

एक कदम आगे

भारतीय रेलवे ने प्रवासी श्रमिकों को न केवल अपने-अपने स्थान पर पहुँचाया बल्कि रोज़गार उपलब्ध कराने की दिशा में बड़ी पहल की है। भारतीय रेलवे ने अपने 165 रेल इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स में 'गरीब कल्याण रोज़गार अभियान' के तहत 6 राज्यों बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश, ओडिशा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में सात लाख से भी अधिक मानव कार्य दिवस जेनरेट किए थे।

कोविड-19 के खिलाफ के जंग में राष्ट्र के संग

जॉन एफ़ केन्नडी की उक्ति है – यह मत पूछो कि देश ने तुम्हारे लिए क्या कर सकता है बल्कि यह पूछ लो कि तुम देश के लिए क्या कर सकते हो ? भारतीय रेल ने वही किया ! देश की इस कठिन परिस्थिति में भारतीय रेल ने देश की आवश्यकताओं की पूर्ति में तत्काल तत्पर रहा। कर्मशालाओं और रेल उत्पादन इकाइयों को मास्क, सैनिटैस्टर, ग्लौव, पीपीई आदि का उत्पादन केंद्र बनाया। इन सबकी तैयारियों को कर्मचारियों को सिखाया। भारतीय रेल द्वारा अनुमोदित स्तर पर, आकार पर, गुणवत्ता पर करोड़ों की संख्या में उत्पादन किया गया और आस-पास के ज़रूरतमंद को, रेल कर्मियों को विशेषतः फ्रंट-लाइन कर्मियों को, उनके परिवार को मुफ्त में वितरित किया। रियूजेबल फेसमास्क, कीटनाशक एवं हैंड सैनिटाइजर्स का वितरण आम जनता को भी किया था। भारतीय रेल भारत-भर होने के कारण सभी भारतीयों को ये सब मिलने में सुविधा रही। रेलवे में स्टेशन में इंजनों एवं कोचों का सैनिटाइजेशन एवं डिसइंफेक्शन किया गया। आवश्यकता आविष्कार की जननी है

देश की आवश्यकता - डॉक्टरों की कमी ! ऑक्सीजन सुविधा युक्त अस्पताल, कोविड मरीजों को देखभाल करने के लिए डॉक्टर एवं परिचारक, नर्स, यदि महामारी व्यापक रूप से फैले तो जिस गाँव में, टाउन में, जिले में फैलता है वहाँ चिकित्सा देने की सुविधा, लाखों के लिए बिस्तर व्यवस्था वह भी सामाजिक दूरी के साथ, सभी सुविधाओं के साथ, सेवा करनेवालों के लिए पर्याप्त पीपीई (व्यक्तिगत संरक्षा उपकरण), आदि को बहुत अधिक मात्रा में उत्पन्न कराने की आवश्यकता थी। भारतीय रेल की तत्काल सोच एवं लगन ने इस समस्या का हल ढूँढा। सोचा कि गाड़ी के कोचों को अस्पताल जैसी सुविधा युक्त बना दें तो मोबाइल अस्पताल हो जाएगा। देश के कोने-कोने तक अस्पताल की सुविधा घंटों में प्रदान किया जा सकता है। इसी उद्देश्य से आपातकालीन परिस्थिति के लिए आईसोलेशन कोच, वेंटीलेटर बनाने में भी जुटे थे। भारतीय रेल के प्रतिष्ठानों में लाखों में क्वारंटीन बिस्तर उपलब्ध कराए गए थे। ट्रेन कोचों को क्वारंटीन / आइसोलेशन वार्ड के रूप में परिवर्तित किया गया था। इन डिब्बों को वार्डों में परिवर्तित करने में

लगभग एक एप्ताह का समय लगता था और एक डिब्बे के बदलाव पर लगभग दो लाख रूपए का खर्च होता था। पर भारतीय रेल का प्राथमिकता रहा कि पहले देश – बाद में संगठन। गैर-एसी आईसीएफ स्लीपर कोच को क्वारंटीन / आइसोलेशन कोच में रूपांतरण का कार्य किया गया तथा भारतीय शैली के शौचालय को स्नान कक्ष में बदला गया। इसमें बाल्टी, जग और साबून डिस्पेंसर की व्यवस्था की गई थी। नल युक्त वॉश बेसिन लगाया गया था।

सभी आपातकालीन चिकित्सा सेवाओं को जारी रखा गया था और बाकी इलेक्ट्रोसर्जरी और निदान जिसकी तत्काल आवश्यकता नहीं, स्थगित किया गया था। पर सभी आम जनता को कोविड-19 के फैलाव को रोकने के बारे में जागरूक करने और साथ ही तालाबंदी के महत्व को समझाने का कार्य भी किया जा रहा था। दूर की सोच को ध्यान में रखते हुए आइसोलेशन वार्ड और क्वारंटीन बेड तैयार करते रहे। अतिरिक्त वेंटिलेटर खरीदे जा रहे थे और डॉक्टरों और संबंधित कर्मचारियों को वेंटिलेटर पर रोगी को उचित रूप से संभालने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा था। इतने से न रुका यत्र-तत्र कोविड-19 के मामलों के प्रबंधन के लिए मॉक ड्रिल की गई थी। अस्पतालों और कार्यालयों के हाई कांटेक्ट एरिया को कीटाणु नाशक और हाइपोक्लोराइड द्वारा साफ़ किया गया था। संदिग्ध मामलों की जाँच के लिए अस्पतालों में डेडिकेटेड फीवर क्लीनिक चलाए गये थे। चिकित्सा विभाग नवीनतम दिशा निर्देशों और गतिविधियों के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य अधिकारियों के साथ लगातार संपर्क में रहते थे।

विशेष कदम

अतिरिक्त चिकित्सा कर्मचारियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, वर्तमान चिकित्सा कर्मचारियों के अलावा कोविड आइसोलेशन और क्वारंटीन वार्डों में मरीजों की सेवा करने के लिए प्रत्येक ज़ोन ने ऑनलाइन और टेलीफोनिक साक्षात्कार आयोजित करते हुए अस्थाई आधार पर डॉक्टरों, नर्सों, अस्पताल परिचारकों, फार्मासिस्ट, हाउसकीपिंग स्टाफ़ आदि की भर्ती की थी।

रेलवे के सभी अस्पताल, डॉक्टर, पैरामेडिकल स्टाफ़ आदि कमर कसे हुए। सेवा कर रहे थे और सेवा के लिए सदा तत्पर रहे। कोविड-19 हेल्पलाइन नंबर प्रारंभ किए गए थे जहाँ चौबीसों घंटे रेलकर्मि तैनात थे। मरीजों के बचाव अथवा इलाज के लिए लाखों रेलकर्मियों को विशेष प्रशिक्षण भी दिया गया था।

रेलवे की मॉनिटरिंग

आम जनता के मन में थोड़ा यह भी रहा होगा कि रेल कर्मचारी को इस तालाबंदी के

दौरान कोई काम नहीं है। **यों?** ही कार्यालय जाते हैं या घर बैठे-बैठे तनख्वाह लेते हैं !पर वास्तविकता दूसरी थी। अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा रेलवे ट्रैक की गुणवत्ता की मॉनिटरिंग लॉकडाउन के दौरान निरंतर की जा रही थी। साथ ही टीआरडी, सिग्नल एवं दूरसंचार आदि के रख-रखाव का कार्य भी नियमित अंतराल पर किया जा रहा था।

जहाँ आवश्यक है वहाँ के रेलवे क्षेत्र की निगरानी पहली बार ड्रोन द्वारा शुरू की गई थी। बिजली ब्लॉक संचालित करके ट्रेनों के सुचारु संचालन के लिए क्रॉसओवर, टर्नआउट, मास्ट कैंटलीवर आदि के रखरखाव को सुनिश्चित करते थे। टॉवर वैगन और फुट पेट्रोलिंग द्वारा लाइव लाइन की जाँच की जा रही थी ताकि गाड़ियों को सुचारु रूप से चलाने के लिए ओएचई गियर का सही होना सुनिश्चित किया जा सके। तालाबंदी के इस कठिन समय में ट्रॉक एवं अन्य उपकरणों को जैसे ओएचई, सिग्नल, बूम-लॉक, ईकेटी आदि सभी को अच्छे रखरखाव में इसलिए रखते थे कि आपातकालीन स्थिति में कोई छोटी सी भी बाधा न हो।

आम जनता और भारतीय रेल

भारतीय रेल सदा आम जनता के हित में काम करती है। ज्यूटी पर आने वाले सभी कर्मचारियों को मास्क और हैंड सैनिटाइजर उपलब्ध कराए जा रहे थे। ठेके पर काम कर रहे कामगारों के लिए भी ये सुनिश्चित किया जा रहा था। रेलवे के क्षेत्राधिकार में आम जनता के लिए बैनर, पोस्टर, पैंपलेट, स्टिकर, सूचना इत्यादि के माध्यम से शिक्षण एवं संचार द्वारा नोवल कोरोना वायरस को फैलने से रोकने के लिए 'क्या करें एवं क्या न करें' की जागरूकता अभियान का आयोजन किया जा रहा था जिससे कर्मचारी एवं आम जनता दोनों लाभान्वित हुए थे। वायरस से बचाव के प्रति जागरूकता लाते हुए ग्रामीणों के बीच मास्क, सैनिटाइजर, साबुन, दवाइयाँ सहित आवश्यकता के सभी संसाधन निःशुल्क उपलब्ध कराए गए थे।

जहाँ चाह वहाँ राह

सर्वभूतेषु करुणा – मानवता का उच्चतम ज्ञान है। हम किसी से कम नहीं है को सिद्धार्थ करते हुए रेलवे के कर्मचारियों ने स्वेच्छा से एक दिन का वेतन पीएम केयर्स फंड में दिए थे ताकि देश, कोरोना बीमारी के दुष्प्रभावों से लड़ा जा सके। रेलकर्मियों ने समूह में अपने-अपने आसपास के गाँव को गोद लिया था।

सरकार ने **आरोग्य-सेतु एप** को डाउनलोड कर लेने का निर्देश दिया। दस लाख से अधिक कर्मचारी इसे डाउनलोड करके स्वयं लाभान्वित हुए और दूसरों के लिए आदर्श बने।

भारतीय रेल ने दिखा दिया कि जहाँ चाह वहाँ राह। तत्परता और लगन, साधन को ढूंढकर

लाएँगे।

कोरोना वारियर्स /योद्धा

भारतीय रेल के कोरोना वारियर्स के परिश्रम, उद्देश्य, समर्पण भाव, लगन को पहचानते और मान्यता देते हुए, प्रेरणा स्वरूप पुरस्कृत किया था। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित किया था। भारतीय रेल अपने बहु-आयामी प्रयासों से इस वायरस को हराने में सबसे आगे रहा।

एक पंथ दो काज

‘ जीवन में सिर्फ़ एक बार मिलने वाला अवसर’ जैसा मानते हुए ताला बंदी अवधि के दौरान भारतीय रेल के बैक एंड योद्धाओं ने यार्ड रीमॉडलिंग, सीजर्स क्रॉसओवर के नवीकरण और पुलों की मरम्मत जैसे काफ़ी समय से निलंबित पड़े रखरखाव कार्यों को सफलतापूर्वक पूरा किया है। निलंबित रीमॉडलिंग के काम सफलतापूर्वक पूरा किया गया। इनमें गतायु परिसंपत्तियों का समय पर बदलाव, रेलपथ, चल स्टॉक, सिग्नल और इंटरलॉकिंग प्रणालियों के उन्नयन और अनुरक्षण हेतु यथोचित प्रौद्योगिकियाँ अपनाना, संरक्षा अभियान चलाना, पदाधिकारियों के प्रशिक्षण पर अधिक ज़ोर और निगरानी के लिए नियमित अंतराल पर निरीक्षण और संरक्षा परिसंपत्तियों के अनुपालन हेतु कर्मचारियों को शिक्षित करना शामिल रहा। मेट्रो रेलवे के विभिन्न अनुरक्षण कार्यों का निष्पादन किया गया।

---श्री ए.श्रीनिवासन,

राजभाषा अधिकारी/मदुरै

.....XXXXXXXXXXXX.....

These are the common proverbs that we use quite often in our daily conversations.

1. आम के आम गुडलियों के दाम (Aam ke aam gudhaliyon ke dam) – Double benefit.
2. छोटा मुँह और बड़ी बात (Chota maunh aur badi baat) – to talk big without having a big position.
3. मान ना मान मैं तेरा मेहमान (maan na maan main tera mehman) –

Getting involved without having any relation to a person or matter.

2023 - बाजरा का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने बाजरे के योगदान के बारे में जागरूकता लाने के उद्देश्य से वर्ष 2023 को “अंतर्राष्ट्रीय बाजरा वर्ष” घोषित किया है। बाजरा जीवन शैली की समस्याओं और स्वास्थ्य चुनौतियों से निपटने में मदद कर सकता है।

पहली बात यही है कि बाजरा अच्छा है। मगर एक सवाल उठता है कि क्या यह सबसे अच्छा हो सकता है? हाँ! यदि वे परिवर्तन की अवधारणा को स्वीकार करते हैं, और उन्हें भिगोने और सूखने की अनुमति देते हैं, तो वे अंकुरित बाजरा के रूप में बदल जाते हैं और यह बिना अंकुरित बाजरा की तुलना में उच्च पोषण मूल्य प्राप्त करता है और अच्छे से अच्छा बन जाता।

हम छठी इंद्रिय वाले मनुष्य जन्म से ही सबसे भिन्न हैं। इस ब्रह्मांड में रहते हुए आइए हम बाजरा की तरह, परिवर्तन की अवधारणा को स्वीकार करें और सर्वश्रेष्ठ बनें। एकमात्र बाधा, मानसिक अवरोध है, "क्या मैं कर सकता हूँ"। ठीक है, हम सभी प्रतिभा कौशल हैं, पृष्ठभूमि परवरिश अलग है, पारिवारिक स्थिति अलग अलग है, हमारे प्रत्येक का संघर्ष अलग हैं, हमारे प्रत्येक का अवसर अलग हैं, प्रत्येक संसाधन अलग हैं, हमारे प्रत्येक का कर्म, जिसे हम भाग्य कहते हैं वह अलग हो सकता है। हम सभी को एक दूसरे से बिल्कुल अलग पाला गया है।

बाहर, यह कभी भी एक जैसा नहीं हो सकता। हम में से प्रत्येक बाहर से लेकिन, एक बात हमेशा समान रहेगी। हम चाहे किसी भी प्रकार के मानव-बाजरा हों, लेकिन हममें से प्रत्येक के पास यह अवसर है कि हम अपने अंदर मनोवृत्ति भर सकते हैं या गुण विकसित कर सकते हैं। परिवर्तन की शुरुआत शुरू से होता है अगर हम अपने अंदर काम नहीं करते हैं, तो बाहर नहीं बदलेगा। पहला संवेदी बाजरा तब बदलने के लिए तैयार होता है जब इसे भिगोकर सुखाया जाता है और अंकुरित बाजरा बन जाता है, सबसे अच्छा बनने के लिए।

अगर हमारा दिमाग खाली है तो हम कितने भी अच्छे इंसान क्यों न हो, हम आसानी से ऊपर नहीं जा सकते क्योंकि यह वह जगह है जहां अंदर काम होता है।

हमारा दृष्टिकोण, हमारी चेतना, हमारा इरादा, हमारा उद्देश्य, आइए हम आंतरिक बदलाव के लिये काम करें, बाहर अपने आप बदल जाएगा। अगर हम अपनी मानसिकता नहीं बदलते हैं, तो जीवन में बदलाव लाना मुश्किल है। आइए अपने अंदर बदलने के लिए काम करें,

बाहरी दुनिया में बदलाव लाने में हम सफल होंगे। हम अपने दैनिक जीवन में अनेक समस्याओं का मुकाबला कर रहे हैं, उनका हल निकालने का उपाय यही है। हिंदी के खिलाफ हमारी मनोभावना जो है, उस में परिवर्तन लाने का भी तरीका यही है।

आइये मिलकर काम करें, तहे दिल से हिंदी को अपनाकर भारत को प्रगति के मार्ग पर और आगे ले चलें।

सफलता की कोई परिभाषा नहीं होती, अगर हम सफल होते हैं तो हम परिभाषा हैं।

..एस. बालसुब्रमणियन

सेवानिवृत्त स्टेशन मास्टर, मदुरै



जीवन शैली एवं स्वास्थ्य

स्वास्थ्य आज हमारे जीवन से कैसे फिट बैठता है यह एक चुनौतीपूर्ण प्रश्न होता है कि आज के दौड़ में क्या हर इंसान को स्वस्थ जीवन मिला है? इसका उत्तर ढूंढेंगे तो न ही कहना पड़ेगा। इष्टतम स्वास्थ्य के साथ कैसे जिएं... और कैसे हमारी जीवन शैली हमारे स्वास्थ्य को रोक रही है इसके बारे में हम इस निबंध में चर्चा करेंगे।

प्राचीन काल में मानव गांवों में निवास करता था। उन्होंने बिना किसी सहायता के अपना काम किया। वे पैदल ही हर जगह गए। आधुनिक दिनों में अपनी काया का उपयोग करके किसी एक दिनचर्या से खुद को थका देने का कोई एक तरीका नहीं है। मेरा मतलब है कि यहाँ मानव जाति के लिए कोई शारीरिक व्यायाम नहीं है।

आज के लोग उनके सभी दैनिक दिनचर्या के लिए बाइक का प्रयोग कर रहे हैं। आधा किलोमीटर दूरी की दूकान तक जाने के लिए बाइक पर जाना ही चाहते हैं। इस तरह की जीवन शैली के कारण हर कोई रोगी बन जाता है।

उदाहरण के लिए, आजकल के बच्चे बाहर जाकर खेलने का अभ्यास नहीं करते हैं। हमेशा मोबाइल, यू-ट्यूब, वीडियो गेम, टीवी, के सामने बैठना – आदि के कारण आज के बच्चे “बेबी बूमरे” हो गए। असामान्य वजन होना, जो थायराइड जैसी बीमारी का कारण बनता है, लड़कियों के लिए सबसे आम शब्द P.COD है, यहां तक कि आज के युवा पीढ़ी किडनी रोग, बी.पी. मधुमेघ और हृदय रोग जैसे कई बीमारियों का शिकार बन जाते हैं। अंत में बहुत कम उम्र में ही मृत्यु हो जाती है।

यदि कोई बच्चा पैदा होने के तुरंत बाद, उसकी रक्षा के लिए उसे बीसीजी, टेटनस, पोलियो, टीबी, हेपेटाइटिस और हाल ही में कोरोना महामारी आदि की बड़े पैमाने पर टीकाकरण कर रहे हैं। इन सबसे बढ़कर गर्भ के शिशु को माडर्न मेडिसिन देना शुरू कर दिया गया है। और इससे चिंताजनक विषय यह है कि हर जगह खोले गए प्रजनन केंद्र, जहाँ पहले प्राकृतिक रूप से होता था, अब बहुत असंभव और किमती विषय बन गये हैं। मेरा मतलब यह है कि नवविवाहित जोड़ी को एक साल में बच्चा होना साधारण विषय है, लेकिन अब वही बात प्रजनन केंद्रों के हाथ पर चला गया है।

जीवन शैली के ऊपर चर्चित विषय हमारे स्वास्थ्य को दिन-ब-दिन बिगाड़ता जा रहा है। इस बुराई को रोकने के लिए, हमें नीचे दिए अनुसार पालन करना है और हमारे समाज को शिक्षित करना है।

इष्टतम उपचार

इष्टतम उपचार क्या है? हमारे इष्टतम उपचार के चार खंभ हैं – पर्याप्त आराम, पौष्टिक आहार, शारीरिक व्यायाम, सकारात्मक सोच/मानसिक प्रवृत्ति।

पर्याप्त आराम

कई लोग हमेशा आराम लेते रहते हैं और कुछ लोग एक घंटे का आराम भी नहीं लेते। 90 प्रतिशत के लोग पहले वर्ग में आ जाते हैं, बाकी बचे लोग ही काम करते रहते हैं। हर एक के शरीर में शरीर के सर्वोच्च बुद्धि द्वारा बाँड़ी क्लॉक को सेट किया गया है। हरेक को रात 11 बजे से सुबह 5 बजे तक सोना जरूरी है। 11:00 से 01:00 बजे तक पित्ताशय का, और 01 बजे से 3 बजे तक यकृत का और 3 बजे से 5 बजे तक फुफ्फुस का समय है। इसलिए पुराने जमाने साधु मुनियों ने तीन बजे उठकर प्राणायाम करते थे।

रात में जल्दी सोना और सुबह जल्दी उठना हमेशा स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है। सूर्योदय के पहले स्नान करना चाहिए। सूर्योदय से पहले स्नान करने से बीपी, मधुमेह और दर्द की बीमारियाँ आदि नहीं होंगी।

शारीरिक व्यायाम

सूर्यनमस्कार/योगासन करना, साँस लेने के व्यायाम/प्राणायाम हमारे शरीर को अच्छा रखा है। ऐसे करने पर आप किसी भी रोग का शिकार नहीं होंगे। इसलिए रोजाना व्यायाम करना हमेशा स्वास्थ्य के लिए सबसे अच्छा होता है। और इसलिए हमारा भारत गरज? रहा है कि योग करें और फिट रहें। सभी विदेशी इसका अनुसरण कर रहे हैं। सभी को करने के लिए अनुरोध किया जा रहा है। 2015 से प्रत्येक 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मना रहे हैं।

उचित भोजन

इन दिनों हमारी पूरी युवा पीढ़ी पिज्जा, बर्गर और मैदा से बने भोजन खाना बहुत पसंद करते हैं जो हमारे शरीर के लिए बहुत हानिकारक है। जंक फुड खाने से सिर्फ कैलोरी जमा हो जाती है और कई बीमारियाँ हो जाती हैं। एक सर्वेक्षण से पता चलता है कि गैस से भरे पानी जैसे पेप्सी, कोक, कलर के आदि पीने से युवा पीढ़ी में गुर्दे की बीमारी का प्रतिशत बढ़ जाता है। यह हमारी जिम्मेदारी है कि युवा पीढ़ी को गैस से भरे पानी जैसे पेप्सी, कोक, कलर आदि पीने से रोकना है। प्यास बुझाने के लिए साधारण पानी पीना ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है।

तांबे के बरतन में पानी भरके उसे पीने के लिए सबको प्रोत्साहित करेंगे तो कोई भी

जलजनित रोग का शिकार नहीं होगा। और सही भोजन लेना हमारी पसंद की बात है। हमारे दैनिक भोजन में बाजरा शामिल करते हैं तो यह पाचन तंत्र के लिए बहुत अच्छा है और हमारी आंतों में अच्छे माइक्रोब इंडुश इंटेस्टाइन (घुट) बनेंगे और निश्चित रूप से, भारतीय आबादी मधुमेह के डर से दूर हो जाएगी। भारत सरकार द्वारा इस वर्ष को बाजरा वर्ष के रूप में घोषित किया गया है और कृषकों को पांच प्रकार के बाजरे का खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

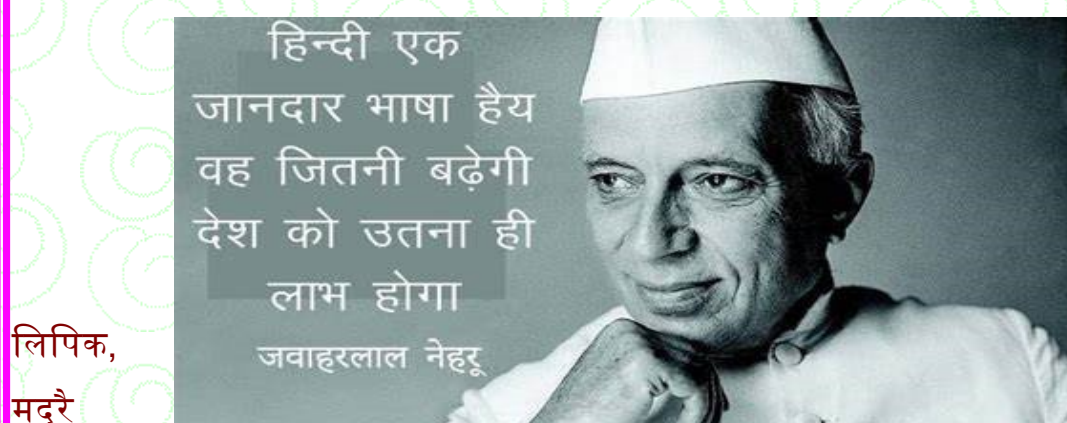
हमारे भोजन में बाजरा जैसे अनाज और साग-सब्जियों को लेने से हमारा स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और हमारे हेल्थ का प्रमुख हिस्सा हमें कॉफी चाय और दूध पीना रोकना है। दूध या दूध से बने पेय के बदले हमें दही, छाछ या हरबल ड्रिंक लेना बहुत अच्छा है।

सकारात्मक मानसिक प्रवृत्ति

यह स्वस्थ जीवन में प्रमुख भूमिका निभाता है। हमारे जीवन को स्वस्थ रखने के लिए नकारात्मक बातों से, मन परेशान करनेवाले टीवी धारावाहिक से, आक्रामक स्टंटवाले सिनेमा दृश्यों से दूर रहना है। इसके अलावा आजकल व्हाट्स एप, ट्विटर, फेसबुक आदि सामाजिक मीडिया कई अवांछित नकारात्मक विषयों को फैला रहे हैं। मेरा विचार है कि इन सबका परहेज करके अच्छी किताबों को पढ़कर हमारे सकारात्मक मानसिक प्रवृत्ति को बढ़ा सकते हैं। इन सबसे ऊपर, हमारे पास जो कुछ भी है उसके लिए हमें कृतज्ञ होना चाहिए।

उपरोक्त सभी का अभ्यास करके और इन पहलू पर ज्ञान प्राप्त करके और अगर हम खुद को बदलने के लिए भी तैयार हैं तो हम अपने जीवन शैली को बदल सकते हैं। ऐसे करने पर स्वस्थ जीवन जी सकते हैं। हमेशा हमें यह याद रखना है कि "हमारा स्वास्थ्य हमारे हाथ में होना है न कि डॉक्टरों के हाथ।

----मीनाक्षी सुंदर,



लिपिक,
मदुरै

वरिष्ठ
कार्मिक शाखा,

देश की आत्मनिर्भरता में राष्ट्रभाषा का योगदान

प्रस्तावना

हर देश की अपनी अलग भाषा होती है, जिसे राष्ट्रभाषा कहा जाता है। हर देश की अपनी-अपनी अलग-अलग भाषाएं हैं। उसी प्रकार से भारत की राष्ट्र भाषा हिंदी है। देश को सम्मानजनक और अद्वितीय राष्ट्र बनाती है। राष्ट्रीय भाषा राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने के लिए भी आवश्यक है।

सारांश

हम कितनी भी ऊंचाई पर पहुंच जाएं परंतु हमें अपनी मुख्यधारा से जुड़ा रहना जरूरी होता है। राष्ट्रभाषा हिंदी इसी संदर्भ में हमें एक नए पद की ओर अग्रसर कर रही है। चाहे वह आजादी से पहले का समय हो या आजादी के बाद का समय।

राष्ट्रभाषा हिंदी ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। यह स्वतंत्र राष्ट्र के लिए, धार्मिक और सांस्कृतिक एकता को बढ़ा सकती है।

राष्ट्रभाषा हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है।

बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है।

हिंदी भारत संघ की राजभाषा होने के साथ ही ग्यारह राज्यों और तीन संघ शासित क्षेत्रों में भी राजभाषा है।

आत्म निर्भर भारत क्या है?

आत्मनिर्भर भारत बनने का तात्पर्य है कि हमारे देश को हर क्षेत्र में खुद पर ही निर्भर होना होगा। आत्मनिर्भर भारत प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी की भारत को एक आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने संबंधी एक दृष्टि है।

आत्मनिर्भर भारत और राष्ट्रभाषा

राष्ट्रभाषा हिंदी का हर भारतीय के जीवन में अत्यंत महत्व है। हिंदी हर भारतीय के उज्ज्वल भविष्य का आधार है।

हिंदी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है।

हिंदी राष्ट्र भाषा ही नहीं, वह संपर्क भाषा, बोलचाल की भाषा तथा व्यापार की भाषा है। स्वयं हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी दुसरे देशों में/विदेशों में मातृभाषा में भाषण देते हैं। यह हमारे लिए गर्व की बात है। राष्ट्रभाषा देश की धरोहर होती है। जिस प्रकार हम तिरंगे को सम्मान देते हैं वैसे ही हमारी भाषा भी सम्माननीय है।

हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसे देश के अधिकांश व्यक्ति बोलते और समझते हैं।

कुटीर उद्योग सामग्री, मत्स्य पालन इत्यादि आत्मनिर्भर भारत के कुछ उदाहरण हैं। हिन्दी छोटे छोटे उद्योगों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस प्रकार से हम अपने परिवार से गांव, गांव से जिला, एक दूसरे से जोड़कर देखे तो इस प्रकार हिन्दी पूरे राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाने में अपना योगदान देती है। इस तरह से हम भारत को आत्मनिर्भर भारत के रूप में देख सकते हैं।

निष्कर्ष:

राष्ट्र में हिंदी का विभिन्न रूप था की आज भी है और आगे भी रहेगी। हिन्दी को समृद्ध करना, इसका उपयोग बढ़ाना और इसे सम्मान देना और दिलाना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है।

निश्चित रूप से हिन्दी आत्मनिर्भर भारत की मजबूत नींव बनेगी और भारत देश को विश्वगुरु का खिताब दिलाएगी।

“ आत्मनिर्भर भारत की मजबूत नींव कहलाएगी, हिन्दी। भारत को विश्वगुरु का खिताब दिलाएगी हिन्दी”

जय हिन्द।

..श्रीमती ए.जी. राधा कृष्णा भारती,
मुख्य कार्यालय अधीक्षक
सामान्य शाखा, मदुरै



साझेदारी '

जो हमारी ना तुम्हारी।

सारी जगत है, भगवान की ॥

तुमने क्या सोचा था यह जग है इनसान की?

रचना की है जिसने जग को लाखों अरमानों की आस में ॥

हवा हो, या पानी हो आकाश हो या धुप।

सब पे मरजी है उनकी चाहे अंधेरे हो या उजाला॥

इनसानों को रखवाली दी उसने जबसे तबसे धोखा पाई है।

जल हो या थल सबपे इन्सान ने आग लगाई हैं॥

जिस फिजा में रहना है, उनको उसकी हत्या नारी है।

क्या सोचा था तुमने यह जग इंसान ने बनाई है ॥

पक्षु पक्षी तो हो गये है बेघर।

अब इनसान की बारी हैं?

कर लो खुद की साझेदारी।

बचा लो अमानत भगवान की॥

ना हमारी ना तुम्हारी।

सारी जगत भगवान की॥

'धन्यवाद'

.....श्री सुरेंद्र पासवान,
स्टेशन अधीक्षक/विरुदुनगर

दुनिया की सबसे शक्तिशाली भाषाएँ

मनुष्य ने जानवरों से खुद को अलग करने के लिए भाषाओं का इस्तेमाल करना शुरू किया। आज विश्व में 6500 से अधिक भाषाएँ बोली जाती हैं।

शोधकर्ताओं का कहना है कि भाषाओं की असली उत्पत्ति लगभग 50,000 साल पहले हो सकता है।

हालाँकि दुनिया की कई प्राचीन भाषाएँ हैं, लेकिन आज उपयोग में आने वाली भाषाएँ कुछ ही हैं, जैसे – लैटिन, अर्मेनियाई, कोरियाई - हिब्रू, अरबी, चीनी, ग्रीक, मिस्र, तमिल और संस्कृत हैं।

इनमें से तमिल दुनिया में बाएँ से दाएँ लिखी जाने वाली एकमात्र प्राचीन भाषा है जिसकी उत्पत्ति 5000 साल पहले हुई थी। . साथ ही, यह एकमात्र ऐसी भाषा है जिसमें बोलने पर सबसे कम मात्रा में हवा बाहर निकलती है।

भूगोल, अर्थशास्त्र, संचार, सामान्य ज्ञान और साम्राज्य के प्रभुत्व के आधार पर दुनिया की सबसे लोकप्रिय भाषाओं में से कौन सी भाषा सबसे शक्तिशाली है, इसका पता लगाने के लिए विश्लेषण किया गया था। इसमें पहला स्थान अंग्रेजी भाषा को ही मिला।

इसके बाद चीनी मॉन्ट्रियल, फ्रेंच, स्पेनिश, अरबी, रूसी, जर्मन, जापानी, पुर्तगाली और हिंदी हैं।

शोधकर्ताओं ने स्पेनिश को दुनिया की सबसे खुशहाल भाषा माना है। "स्पैनिश सीखने के लिए सबसे आसान भाषा है और इसमें सबसे अधिक- 'सकारात्मक' शब्द हैं। इसके बाद पुर्तगाली, अंग्रेजी, इंडोनेशियाई, फ्रेंच, जर्मन, अरबी, रूसी, कोरियाई और चीनी भाषाएं हैं।

विश्व की सबसे तेज भाषा जापानी भाषा है। इस भाषा में एक मिनट में 782 शब्द बोले जा सकते हैं। इसके बाद आप स्पेनिश में 780 शब्द, फ्रेंच में 718 शब्द और अंग्रेजी में 220 शब्द बोल सकते हैं।

मंदारिन चीन की आधिकारिक भाषा है और दुनिया में सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली जाती है। यह 98 करोड़ से अधिक लोगों द्वारा बोली जाती है। इसके बाद, 44.6 करोड़ से अधिक लोग अंग्रेजी बोलते हैं।

अंग्रेजी बोलते समय दिमाग का बायां हिस्सा ही काम करता है। लेकिन चीनी बोलते समय दायां और बायां दिमाग के दोनों भाग काम करते हैं। अंग्रेजी भाषा के बाद दुनिया भर में सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली और अधिकांश देशों में सिखाई जाने वाली भाषा फ्रेंच ही है।

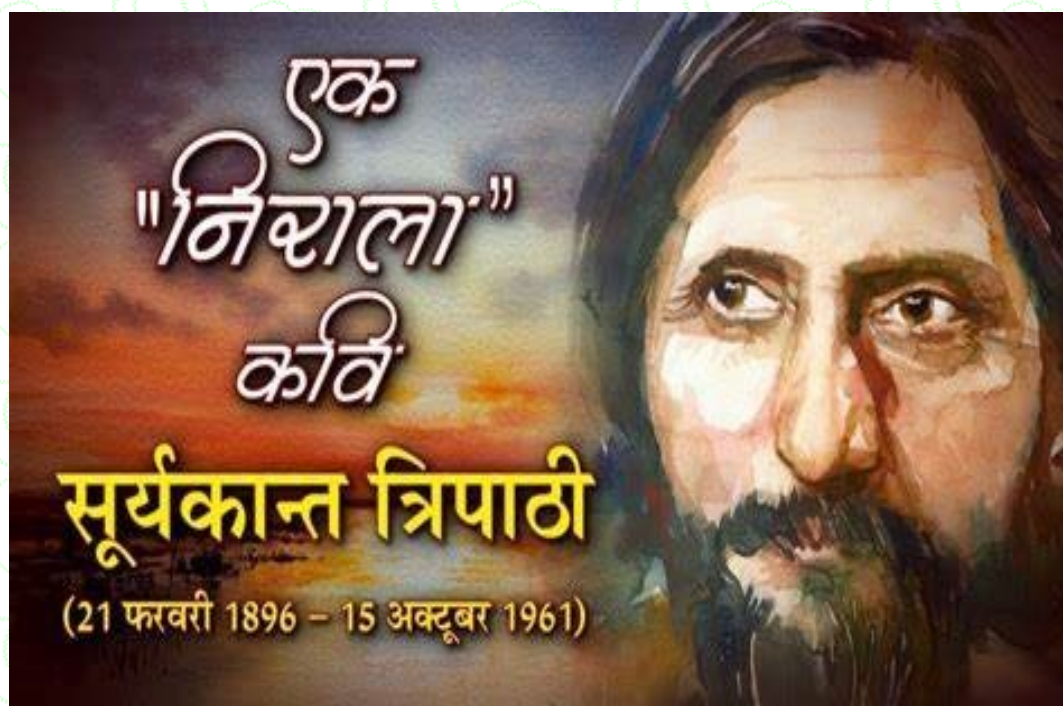
हालाँकि कोरियाई मूल रूप से एक ही भाषा है, लेकिन उत्तर कोरिया और दक्षिण कोरिया में बोली जाने वाली भाषाओं में कई अंतर हैं। दुनिया में सबसे कम शब्दों वाली भाषा बाकी तकी है, जो दक्षिण अमेरिका के एक क्षेत्र गरीदम में बोली जाती है, जिसमें केवल 340 शब्द हैं।

संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषाओं में से एक, अरबी सबसे समृद्ध भाषा है, इस मायने में अद्वितीय है कि यह दुनिया की किसी भी अन्य भाषा के साथ मिश्रित नहीं है, और इस भाषा में केवल इसके अपने ही शब्द 1.23 करोड़ हैं। लेकिन दुनिया की कई भाषाओं में अरबी शब्दों का मिश्रण है।

मातृभाषा दिवस फरवरी 21 को मनाया जाता है। 17.11.1999 को यूनेस्को ने इसे स्वीकृति दी। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य है कि विश्व में भाषाई एवं सांस्कृतिक विविधता और बहुभाषिता को बढ़ावा मिले।

यूनेस्को द्वारा अन्तरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की घोषणा से बंगलादेश को भाषा आंदोलन दिवस के लिए अन्तरराष्ट्रीय स्वीकृति मिली, जो बांग्लादेश में सन 1952 से मनाया जा रहा है। बांग्लादेश में इस दिन एक राष्ट्रीय अवकाश होता है। संयुक्त राष्ट्र आम सभा ने 2008 को अन्तरराष्ट्रीय भाषा वर्ष घोषित करके मातृभाषा दिवस के महत्व को बढ़ाया है।

.....श्रीमती एल.मुत्तुलक्ष्मी,
वरिष्ठ अनुवादक, मदुरै



First Women..... in India

1. Who was the first women President of India? ...Ms.Pratibha Devi Singh Patil
2. Who is the first independent charge Women Defense Minister of India?
...Ms.Nirmala Sitaraman
3. First women IPS of India ...Ms.Kiran Bedi
4. First Indian woman to scale Mount Everest ...Ms.Bachendri Pal
5. First woman to fight British in North India ...Ms.Rani Laxmibai
6. First woman to fight British in South India ...Ms.Velu Natchiar
7. First woman chief Minister of India ...Ms.Sucheta Kriplani
8. First woman Governor of India ...Ms.Sarojini Naidu
9. Name the first Indian woman to swim Across the English Channel?
...Ms.Arati saha
10. Name the woman who become first IAS officer in India
...Ms.Anna George Malhotra
11. National women's day in India is Celebrated on whose birth day and when?
Ms.Sarojini Naidu,February-13
12. First woman speaker of Loksabha/India? ...Ms.Meira kumar
13. First Miss World from India? ...Ms.Reetha Faria
14. Who is the first Miss Universe from India? ...Ms.Susmitha Sen
15. Who is the first woman get Bharat Ratna? ...Ms.Indira Gandhi
16. Who is the first Indian origin woman who reached space?
...Ms.Kalpana Chawla
17. First woman President of Indian National Congress? ...Ms.Annie Besent
18. Who was first woman Rafale fighter jet pilot? ...Ms.Shivangi Singh
19. Who was first female football referee to officiate
international matches for FIFA? ...Ms.Rupa Devi
20. First woman to command frontline IAF combat unit ...Group Captain Shaliza Dhami
21. First woman Loco Pilot to work Vande Bharat Exp from Mumbai Ms.Sureka Yadav

...श्री एस.गणपति, मुकाधी/याँत्रिक शाखा, मदुरै

सोच

मैं मेले में अकेला था
 बस कानों में मेला शब्द
 अपनी पूरी ताकत के साथ कोई धुन पीट रहा था
 मुझे बचपन का मेला याद आया
 मैंने देखा मेले में झूले नहीं हैं,
 जलेबी भी नहीं है
 लेकिन मदारी खेल ज़रूर है
 यह बचपन का मेला नहीं था
 मैंने खिलौने की जगह कुछ और खोजा
 बचपन में चश्मा नहीं था अब है
 मेले की चमकती रौशनी के पार
 कुछ भी खोज पाना मुश्किल होता है
 मैंने देखा एक खाली दुकान पर
 हामिद के चिमटे जैसी
 मेरे कवि की किताब रखी है
 कवि ने कई सदियों पहले लिखा था
 मैं अभी पढ़ रहा था
 लेकिन जैसे कवि ने आज सुबह ही लिखा हो
 चूल्हे की आग पर, टूटे स्लेट पर
 सफ़ेद दाढ़ी पर और छोटी मूंछ पर
 मैंने पढ़ा!
 कवि ने मेरे नाम मुझको कुछ भी समर्पित नहीं किया था
 सबको किया था जो नागरिक हैं
 और नहीं भी
 बचपन के मेले में कैमरा नहीं होते थे
 बायस्कोप होता था, जिसमें हम दिल्ली देखते थे
 मैंने बायस्कोप से दिल्ली देखा

कवि राजपथ पर बीड़ी पी रहे थे
वहीं राजपथ पर कवि के बगल से एक पूरी भीड़ निकल गई
उनकी भाषा के शब्द चिल्लाते
किसी ने कवि को नहीं पहचाना

अधूरे सपने की तरह बायस्कोप की रील
खत्म हो गई
मैंने देखा तो
मेरी मेज़ पर कवि की तस्वीर नहीं
एक चिमटा रखा है।

....श्री विनय कुमार चौरसिया
वरिष्ठ लिपिक, संकर्म शाखा, मदुरै



जयशंकर प्रसाद

जन्म- 30 जनवरी 1889

मृत्यु- 15 नवम्बर 1937

www.

स्वाभिमानि औरत की कहानी

कहते हैं सबसे मुश्किल है सहज होना। जीवन जीना बिना ये सोचे कि और भी कैसे जीया जा सकता था? महत्वाकांक्षा क्या है बिना आत्माभिमान के? दुनिया से न्यूनतम सोचकर जीवन का विस्तार कैसे देखें ? बहुत लंबा जीने के लिए तो कितनी प्रार्थनाओं की जरूरत होती होगी ?

कलकत्ता शहर के एम. जी. रोड में एक कमरा है, कोई ब्रिटिश जमाने का बना, पहली मंजिल से दाहिनी ओर, कल तक वहाँ एक महिला थीं जिनका जीवन इन सभी प्रश्नों का उत्तर था। हरबंस कौर जी से पूछने पर कि आपका जन्म कब हुआ वो साल तो नहीं बता पाती लेकिन उन्हें याद है कि वे कुछ 7 - 8 साल की थी जब देश आजाद हुआ। बचपन कई भाई – बहनों के साथ कलकत्ता के उसी कमरे में बीता, पिता डॉक्टर थे। उसके बाद हरबंस कौर की कहानी में कुछ भी कहने लायक नहीं ऐसा उन्होंने बातचीत के दौरान कहा था। लेकिन उनकी कहानी उस लड़की के लिए अलग है जो कक्षा दसवी से लेकर बारहवी तक उसी कमरे की जमीन पर बैठी उनसे हिन्दी पढ़ती थी। हम उन्हें हरबंस मैम कहते थे। हरबंस मैम ने साठ के दशक में **B.Sc** से स्नातक और फिर **LAW** की पढ़ाई पूरी की। इस तरह वे देश की उन तमाम महिलाओं की सूची में शामिल होती हैं जिनके कारण आज लड़कियां स्कूल जा पाती हैं। उन्होंने आजीवन विवाह नहीं किया। कारण पूछने पर बताया कि विवाह की उम्र में स्वास्थ्य ऐसा नहीं था कि किसी का घर बसा सकूं। स्वास्थ्य के ही कारण उन्होंने पास के एक स्कूल में पढ़ाना शुरू किया। आजीवन वहीं कार्यरत रहीं। और रिटायरमेंट के बाद घर पर बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने लगीं। आस पास के स्कूल का शायद ही कोई ऐसा विद्यार्थी हो जो उनके पास न पढ़ा हो। आज कोचीन सेन्टर की भव्यता और शिक्षा का व्यवसाय देखती हूँ तो उस छोटे से कमरे में बीसों विद्यार्थियों का जमीन पर बैठकर पढ़ना कोई श्रद्धापूर्ण दौर लगता है। मैम का कोई निजी परिवार नहीं था, सारे भाई – बहन विवाहित थे और मैम ने अपने लिए मरणोपरांत तक की आत्मनिर्भरता और एकांत जीवन को चुना।

अकेलेपन पर पूछे हर सवाल पर उनका एक बेहद सहज 'ना' प्रतिक्रिया मिल जाता था, जैसे अकेले होना न तो कमजोरी है न ही कोई ताकत। सोचिए एक कमरा और एक जीवन जहां आपको आपनी दिनचर्या का सब कुछ उम्र के 85 वे वर्ष में भी खुद ही करना हो और आपके पास दर्जन भर विद्यार्थियों के अलावा सम्प्रेषण के लिए कोई न हो। दो नाइटी , कुछ साड़ियां, एक कीपैड फोन, दो बाल्टी पानी और किताबों से भरी तीन बड़ी अलमारियां, इतनी ही थी उनके जीवन की परिधि। फिर भी इस बात का छटाक भर भी बोध नहीं था उन्हें। हम घर के नाम पर

BHK वाले कमरे खोजते हैं, और मैम ने इस पृथ्वी पर उतनी ही जगह घेरी जितनी कि एक इंसान के लिए जरूरी थी। उन्हें यूं ही अकेले, शांत देखकर लगता था मानों साहचर्य के लिए उदास होना जीवन की सबसे बड़ी मूर्खता है। जीवन के लगभग 60 वर्ष एक ही कमरे में, न्यूनतम जरूरतों के साथ सिर्फ शिक्षा, किताबों और विद्यार्थियों के बीच बीता। पूरा जीवन पढ़ने - पढ़ाने को समर्पित कर दिया। मैं नहीं जानती आज अगर मैम की शवयात्रा में उनके सारे विद्यार्थियों को लाया जाता तो वह काफिला शहर के कितने ही चौराहों को घेर लेता। पर मैं जानती हूँ कि हरबंस कौर कोई थी और अब वह नहीं हैं इस दुनिया में। ये जानने के लिए उनके सभी विद्यार्थियों को कई साल लग जाएंगे, क्योंकि हम लगातार आगे बढ़ते हुए अपनी पिछला सब भूलते चले जाते हैं। अब लगता है महान होने का पहचाने जाने से कोई संबंध नहीं। ऐसी ही थीं, उनसे चाहे जो सवाल पूछ लो उनके जीवन पर, उनका जवाब ऐसा ही होता मानों इस दुनिया में कुछ भी रहस्यमयी नहीं। गुमनाम नाम की तरह जीना भी विचित्र नहीं लेकिन हरबंस कौर का जीवन, उनका व्यक्तित्व ऐसा नहीं कि कोई महज था जो अब नहीं है। ये उनके विद्यार्थी जानते हैं जो आज सफल जिंदगी बीता रहे हैं कि उनकी निर्माण प्रक्रिया में हरबंस कौर जी की क्या भूमिका थी। उन्होंने कभी इस भूमिका का श्रेय भी नहीं मांगा, ना ही लालायित करने वाले किसी प्रस्ताव को कभी स्वीकार किया। जो कमरा और जीवन आप इस चलचित्र में देखेंगे वही उनका सत्य है और व्यक्तिगत चुनाव भी। पिछले महीने जब इस चलचित्र के लिए मैं उनसे मिली थी तो बातचीत में मेरे द्वारा यह पूछे जाने पर कि “आपकी भावी जीवन से क्या अपेक्षा है?” उनका जवाब था “मैंने एक आत्मनिर्भर जीवन जीया है और वैसी ही मरना चाहती हूँ। ये उनकी पाक नियत थी कि उन्हें ऐसी ही मृत्यु मिली।

(कितना कुछ सोचा था उनकी कहानी को बयां करने के लिए, लेकिन कल उनके देहांत की खबर सुनकर इच्छा नहीं हुई, लगा जिसने स्वयं अपने जीवन को इतना सहज समझा मानों अपवाद होने में कोई बड़प्पन नहीं, उनको याद भी उतनी ही सहजता से किया जाए। लेकिन मेरे लिए वे हमेशा एक कहानी होंगी आजीवन शिक्षा को समर्पित एक आत्मनिर्भर, स्वाभिमानी औरत की कहानी ।)

....श्री विनय कुमार चौरसिया

वरिष्ठ लिपिक, संकर्म शाखा, मदुरै

राष्ट्रीय एकता का महत्व

राष्ट्रीय एकता का अभिप्राय

राष्ट्रीय एकता का अर्थ है- एक राष्ट्र के रूप में हमारी पहचान। हम सर्वप्रथम भारतीय हैं इसके बाद हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिख आदि हैं। अनेक विविधताओं और भिन्नताओं के रहते हुए भी आन्तरिक एकता की भावना देश के सभी धर्मों, परम्पराओं, आचार-विचारों भाषाओं और उपसंस्कृतियों का आदर करना, भारतभूमि और सभी भारतवासियों से हार्दिक लगाव बनाए रखना, यही राष्ट्रीय एकता का स्वरूप है।

भारत एक विशाल- विस्तृत सागर के समान है। जिस प्रकार अनेक नदियाँ बहकर सागर में जा मिलती हैं और उनकी पृथक्ता मिट जाती है, उसी प्रकार विविध वर्णों, धर्मों, जातियों, विचार धाराओं के लोग भारतीयता की भावना से बँधकर एक हो जाते हैं। जिस प्रकार अनेक पेड़-पौधे मिलकर एक वन प्रदेश का निर्माण करते हैं, उसी प्रकार विविध मतावलम्बियों की एकता से ही भारत का निर्माण हुआ है।

राष्ट्रीय एकता - अखण्डता की आवश्यकता

भारत विविधताओं का देश है। यह एक संघ-राज्य है। अनेक राज्यों या प्रदेशों का एकात्म स्वरूप है। यहाँ हर राज्य में भिन्न-भिन्न रूप, रंग, आचार विचार भाषा और धर्म के लोग निवास करते हैं। इन प्रदेशों की स्थानीय संस्कृतियाँ और परम्पराएँ हैं। उन सभी से मिलकर हमारी राष्ट्रीय या भारतीय संस्कृति का विकास हुआ है।

हम सब भारतीय हैं, यही भावना सारी विभिन्नताओं को बाँधने वाला सूत्र है। यही हमारी राष्ट्रीय एकता का अर्थ है और आधार है। विविधता में एकता भारत राष्ट्र की प्रमुख विशेषता है। उसमें अनेक धर्मों और सांस्कृतिक विचारधाराओं का समन्वय है। भारतीयता के सूत्र में बँधकर ही हम दृढ़ एकता प्राप्त कर सकते हैं। राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के बिना भारत का भविष्य अंधकारमय है।

राष्ट्रीय एकता - अखण्डता सांस्कृतिक विरासत-

राष्ट्रीय एकता और अखण्डता भारतीय संस्कृति की देन है। भारत विभिन्न धर्मों, विचारों और मतों को मानने वालों का निवास स्थान है। भारतीय संस्कृति इन विभिन्नताओं का समन्वित स्वरूप है। भारत की भौगोलिक स्थिति ने भी इस सामाजिक संस्कृति के निर्माण में योगदान दिया है। विभिन्न आघात सहकर भी भारतीय एकता सुरक्षित रही है, इसका कारण उसका भारत की सामाजिक संस्कृति से जन्म होना ही है।

राष्ट्रीय एकता का वर्तमान स्वरूप

आज हमारी राष्ट्रीय एकता संकट में है। यह संकट बाहरी नहीं आन्तरिक है। हमारे राजनेता

और शासकों ने अपने भ्रष्ट आचरण से देश की एकता को संकट में डाल दिया है।

अपने वोट-बैंक को बनाए रखने के लिए इन्होंने भारतीय समाज को जाति-धर्म, अल्पसंख्यक- बहुसंख्यक और प्रादेशिक कट्टरता के आधार पर बाँट दिया है। इन कायर और स्वार्थी लोगों ने राष्ट्रीय एकता को संकट में डाल दिया है।

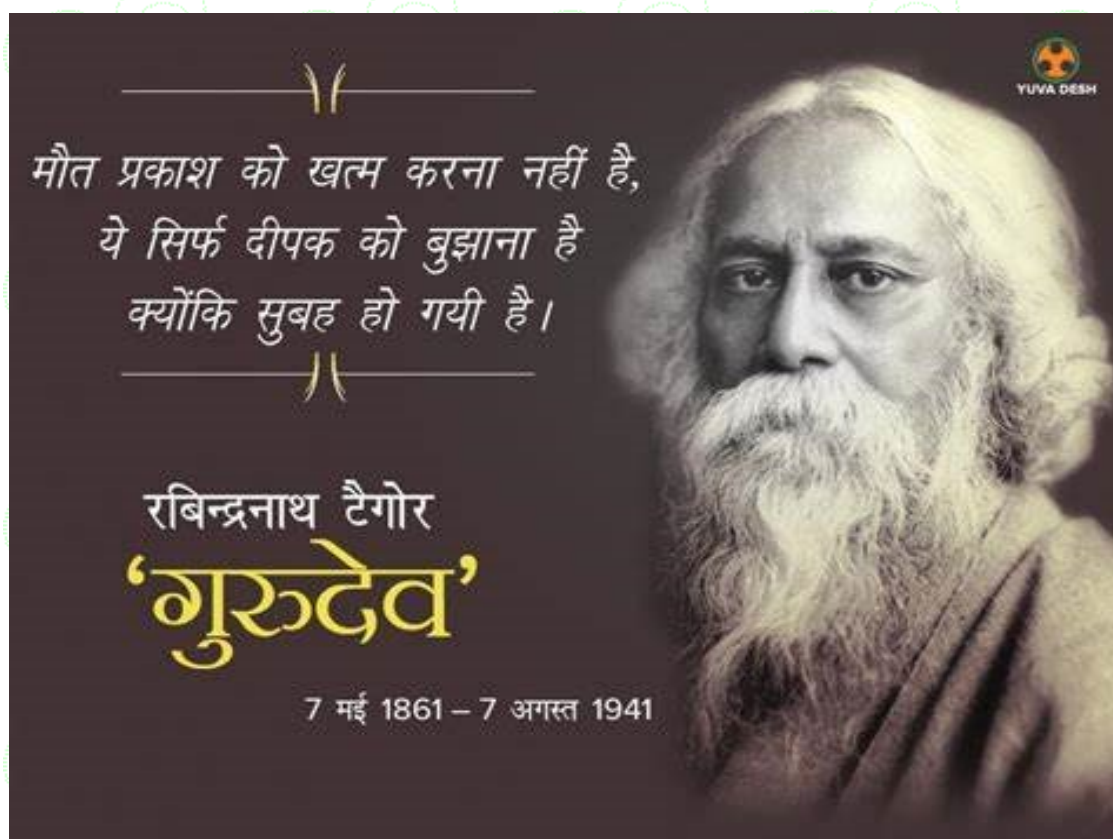
राष्ट्रीय एकता और हमारा कर्तव्य

राष्ट्रीय एकता पर हो रहे इन प्रहारों ने राष्ट्र के रूप में भारत के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लगा दिए हैं। इस संकट का समाधान किसी कानून के पास नहीं है। आज हर राष्ट्रप्रेमी नागरिक को भ्रष्टाचार के विरुद्ध खड़ा होना है।

आपसी सद्भाव और सम्मान के साथ प्रेमभाव को बढ़ावा देना है। समाज के नेतृत्व व संगठन का दायित्व राजनेताओं से छीनकर निःस्वार्थ समाजसेवियों के हाथों में सौंपना है। इस महान कार्य में समाज का हर एक वर्ग अपनी भूमिका निभा सकता है। राष्ट्रीय एकता को बचाए रखना हमारा परम कर्तव्य है।

भारत विश्व का एक बड़ा एवं महत्वपूर्ण जनतंत्र देश है। लम्बी पराधीनता के बाद वह विकास के पथ पर अग्रसर है। भारत की प्रगति के लिए उसकी एकता- अखण्डता का बना रखना आवश्यक है। प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है कि भारत की अखण्डता को सुनिश्चित करें।

.....श्री अजय कुमार मीना,
वरिष्ठ लिपिक, बिजली शाखा, मदुरै



लोह पथ गामिनी - रेल: रेलयात्रा

लहरों सी लहराती जाये
सीटी बजाती धुआं उड़ाती जाये
कोई न रोक सके रफ़्तार
लोह पथ गामिनी ये कहलाये

दुनिया भर का बोझ उठाये
रात और दिन का सफर कराये
सबसे उत्तम इसकी सवारी
सबकी सुरक्षा की जिम्मेदारी

भ्रमण रेल का मन भरमाये
कुल्लड़ की चाय जी ललचाये
चाट पकोड़ी चटनी कचौड़ी
सब्जी - पूरी भूख बढ़ायें।

रेल की दोस्ती याद रह जाये
छोटी मुलाकातें बड़ी बातें कराये
मिलजुल के हमें रहना सिखाये
भेदभाव की भावना मिटाये

नगरी-नगरी सबको पहुंचाये
दोस्तों, रिश्तेदारों से हमें मिलाये
कश्मीर से कन्याकुमारी की
यात्रा ये आसान बनाये

मंज़िल से ज़्यादा सफर का मज़ा है
होता सबको उल्लास बड़ा है
रेल से सीखा हमने यारों
मिलों की दूरी तत्काल में हो जाये
रिश्ते हो करीब तो दूरी घट जायें।

.....श्री अजय कुमार मीना,
वरिष्ठ लिपिक, बिजली शाखा, मदुरै

भाषा अनेक भारत एक

पहले यह बता दूं कि मैं क्यों इस शीर्षक को चुना। अनादिकाल से मानव धीरे-धीरे अपने भावों को अपने साथ रहे अन्य भाइयों को बताने के लिए भाषा के माध्यम को सृजन किया था। वास्तव में भाषा केवल यह एक प्रकार की ध्वनि है। प्रारंभ में एक-एक भाव के लिए अलग-अलग ध्वनियों का उपयोग वह करने लगा तो बाद में वही ध्वनि धीरे-धीरे बोली बनी, कालांतर में भाषा बन गई। भाषा के बाद उसे सुदृढ़ करने के लिए कई सारे नियमों को अपनाया ताकि सब जगह एक ही प्रकार का भाषा का उपयोग हो। उसे ही हमने बाद में व्याकरण कहा।

मूलतः भाषा केवल अपने-अपने भावों को प्रकट करने का एक माध्यम है। सोचता हूं कि आदमी अपने घर में या कभी-कभार जंगल के जानवरों से भी बहुत अच्छा रिश्ता स्थापित करता है। इनके आज्ञा का पालन वह जानवर भी सही करते हैं।

जब आदमी खतरे में रहा तब वह जिस प्रकार का भाव महसूस करेगा वही भाव शायद जानवर के लिए भी होगा। जब जानवरों को खतरे से कोई बचाता है तो जो कृतज्ञता वह अपने शारीरिक अवयवों से दिखाता है उसे किस भाषा का नाम हम दे पाएंगे।

मानव जो दूसरी भाषा नहीं जानतो लेकिन अपने सहात्री या सहकर्मी से अपने भावों को जब प्रकट करना पड़ता है तब किस भाषा का प्रयोग करेगा। हकीकत तो यह है कि कहने वाला जो उसे चाहता है उसे दूसरा बिना उस भाषा के ज्ञान छु उसे समझ लेता है। कारण आत्मीयता एवं भावों की एकरूपता है।

भाषा केवल हमारे होठों से या तालव्य से निकलने वाले ध्वनि ही नहीं है। आंतरिक मन के या तहे दिल से हम कुछ कहना चाहते हैं उसे दूसरे समझ लेते हैं। शारीरिक भाषा यानी हमारे हाव-भाव से ही हमारे मन के विचार को समझ लेते हैं।

निकटतम दोस्त बिना कहे भी समझ लेते हैं, उसी भाव को महसूस करते हैं। जिसे टेलीपथि कहा जाता है। यहाँ कौन-सी भाषा है।

वैसे बिना किसी माध्यम के दूसरों तक भाव पहुंचाया जा सकता है। इसके लिए भाषा कभी अडचन न रहा।

भाषाएं अनेक भारत एक भी इसी का द्योतक है।

यह भारत भूमि बहुत ही पुण्य भूमि है हिमालय से लेकर कुमरी तक जैसे आ सेतू हिमाचल कहा जाता है, तक इतनी विभिन्नता है। विभिन्न प्रकार की संस्कृति विभिन्न रहन-

सहन, विभिन्न खान-पान, विभिन्न सभ्यताएँ, विभिन्न संप्रदाय, विभिन्न रीति-रिवाज, विभिन्न धर्म, विभिन्न शैली, विभिन्न विचार..... सब-कुछ विभिन्न होते हुए भी एकता ही हर कहीं नजर आता है। भारत की समृद्धता का यही कारण है। समृद्ध देश रहने के कारण ही हूण, शाक्य, मंगोल्य, मुसलमान, ईसाई, डच, फ्रेंच, ऐरे गैरे सभी हमारे देश पर टूट पड़े हैं। ज़रूर उनकी भाषा का प्रभाव हम पर पड़ा। उनकी शैली, वेष-भूषा आदि का प्रभाव पड़ा। पर मूल में रहे हमारी संस्कृति साबित कर चुकी है कि भाव भाषातीत है। जब तक अपनापन का भाव है तब तक भाषा केवल एक साधन है। साधन अनेक पर साध्य एक है।

हमारे भारत की भाषा प्यार की भाषा है, स्नेह की भाषा है, बांधने की नहीं बल्कि जोड़ने की कड़ी है।

श्रीराम अयोध्या से रामेश्वरम तक आये। इतना क्यों श्रीलंका तक गये। एक ज़माने में श्रीलंका भी हमारा ही देश रहा। किस भाषा में बात किये होंगे?

गौतम बुद्ध, महावीर, गुरुनानक, आदिशंकराचार्य, रामनुजर, मद्वाचार्य आदि कई महान के लिए क्या कभी भाषा बाधा रही? कभी नहीं। लोगों तक पहुँचाने के लिए सभी महान उस ज़माने की भाषा को अपनाया। विषय प्रमुख है। विचार प्रमुख है। भाषा केवल आवरण है। एक प्रस्तुति है। शंकराचार्य जी की मातृभाषा मलयालम है पर संस्कृत को अपनाया। बुद्ध की मातृभाषा बिहारी है पर पाली को अपनाया। भाषा कभी भी कहीं भी भारत में अडचन न रहा।

सूफियों को ले लीजिए। कबीर जी जैसे साधुओं की भाषा के रूप में एक नई भाषा का ही सृजन किया जिसमें सभी भाषाओं के लिए स्थान मिला।

बिना भाषा के भी विचारों को व्यक्त किया जा सकता है। दक्षिणामूर्ति जिसे हम आदि गुरु मानते हैं के बारे में सुने होंगे – विडम्बना यह है कि गुरु युवा है और शिष्य बूढ़े हैं। मौन ही उसकी भाषा है और उस मौन-व्याख्या को सभी शिष्य समझते थे। वहाँ की भाषा को हम क्या कहेंगे?

कहा जाता है कि कोस-कोस पर पानी बदलता और दो कोस पर भाषा। भारत के लिए यह उक्ति सौ-फी-सदी सही है। पर बदलती भाषा लोगों के मूलभावों को बदलती है।

देशवासी को ही नहीं विश्वभर के लोगों को अपना समझते हैं हर भारतीय। तभी तो वसुधैव कुटुंबकम का भाव जगा।

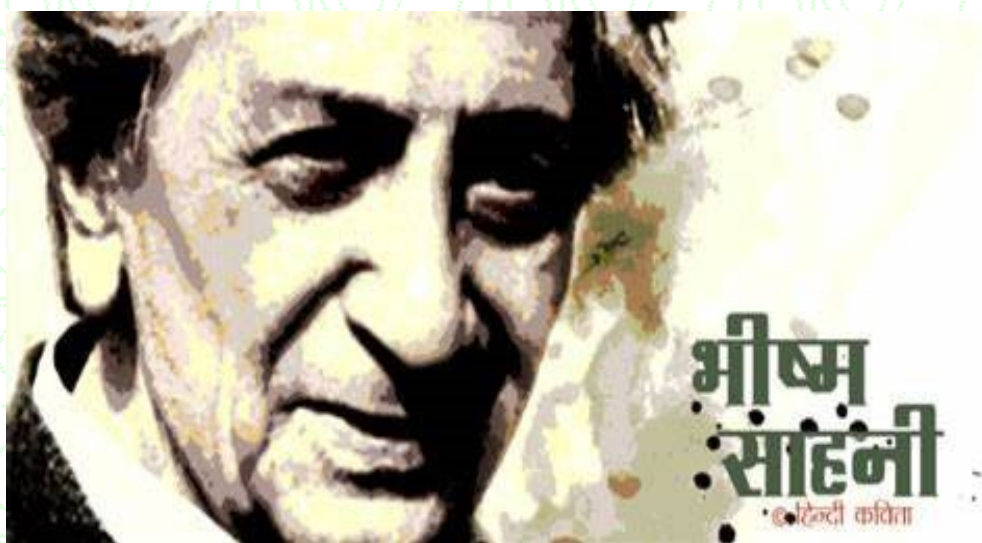
देश के किसी कोने पर हो रही सुखद समाचार को सुनकर सुखी होने और दुखद समाचार को सुनकर दुखी होने का मनोभाव रखनेवाले हम भारतीयों के लिए भाषा केवल सहयोगी साधन है। कभी अडचन न रहा और न रहेगा। भाषाएँ अनेक पर भाव एक। भारत एक। हम भारतीय एक।

एक छोटी सी कथा के साथ इतिश्री करना चाहता हूँ। कई भारतीय रेगिस्तान में पैदल जा रहे थे। इतना थक गये और इतने प्यासे थे कि एक बूँद के लिए बहुत तरसने लगे थे। तब अचानक संयोगवश एक देवदूत सामने आया और सबको देखकर कहा कि मैं आप सभी लोगों के लिए एक वर **ही देना** चाहता हूँ। जो चाहे पूछिए। एक कहने लगा कि **एंगलुक्कु तन्नी वेणुमा**। दूसरे ने कहा – **नहीं नहीं** वह नही समझता है **माकू नीलु कावाली...**। तीसरे ने कहा इन सबकी बात मत सुनिए ...**इदानीं अस्माकं आवश्यकम जलमेव।** तब तक चौथे ने कहा – **Don't listen to them. Utmost need now is Water. Please Give us water.** पांचवे ने कहा **इप्पोळुदु आवश्यकमान वेळ्ळमानु।**

उस देवदूत ने कहा आप सबकी चाहत एक ही है। सबकी अपनी-अपनी इच्छा की पूर्ति होगी। यही है भारत में भी। भाषाएँ अनेक पर भाव एक।

जय हिंद। जय हिंदी।

---श्री रंग वरदराजन
वरिष्ठ अनुभाग इंजीनियर,
याँत्रिक शाखा, मदुरै



पिता की भाषा

पिता मुझसे उतने बड़े हैं
जितना गांव बड़ा होता है शहर से
एक नहर बड़ी होती है किसी नदी से
जो खेतों तक उतना ही पहुंचती है
जितनी खेतों को उसकी ज़रूरत है

वो इतने बड़े हैं कि मेरी सभ्यता के
शर्तिया खांकों में अट नहीं पाते
रह जाते हैं बाहर एक आदिम उदार हंसी के साथ
वही हंसी जो मेरे बाबा के
हार चढ़ी फोटो पर एक क्षणिक याद की तरह अटकी है
बाबा तस्वीरों में कभी नहीं हंसते थे
पिता भी नहीं ही हंसते हैं
चाचा इस न हंसने वाली सभ्यता के नहीं थे
शायद इसलिए उनकी कोई हार चढ़ी तस्वीर नहीं है हमारे पास
इस पंक्ति को लिखते समय

मुझे अचानक **अहसास** हुआ

कि बाबा और चाचा के 'थे' के बीच
पिता बचे रह गए हैं इस 'है' के साथ
कि इस एकल 'है' की कीमत
उनको चुकानी है उम्रभर

पिता मुझसे उतने ही भावुक हैं
जितने भावुक होते हैं
पतझड़ के आने पर दरख़्त
उनको गुलाब देखकर अम्मा याद नहीं आतीं

आती भी होगी तो कह सकने की भाषा
 उनकी सभ्यता ने उनको नहीं दी
 पिता पतझड़ के दरख्त हैं
 उनके पास फूलों की भाषा नहीं है
 लेकिन एक आवाज़ है
 जिस आवाज़ में वो चाचा के याद की सिसकियां दबा लेते हैं
 अम्मा किसी डाकिए की तरह अगली सुबह बताती हैं
 कि क्यों आज पिता काम पर नहीं जाना चाहते थे
 फिर भी गए!

जिस आवाज़ में बाबा और चाचा की
 याद के लिए भाषा नहीं है
 उसी आवाज़ में आज पिता ने मुझसे कुछ कहा
 मेरी सभ्यता में उस आवाज़ की भाषा
 मेरी पीठ पर पड़ती चाचा की थपकी थी

तुम हमारा अभिमान हो
 सिर्फ़ इतना कहने के लिए
 पिता कुछ नहीं बोले
 बस अपनी आवाज़ में गुनगुने पानी जितनी
 गर्मी ले आए
 मैं समझ गई
 आज मेरे पिता अपनी सत्ता की पहचान भूल चुके हैं
 अबकी बार बसंत आने पर
 हम चाचा की याद में मिलकर गाएंगे
 अपने गांव का कोई लोक गीत।

श्री विनय कुमार चौरसिया
 वरिष्ठ लिपिक, संकर्म शाखा, मदुरै

अजंता-एलोरा की गुफाएँ, भारत

अजंता-एलोरा की गुफाएँ, भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में स्थित हैं, जो 34 मठों, मंदिरों और तीर्थस्थलों का एक संग्रह है जो चट्टान को काटकर बनाई गई हैं। गुप्त और राष्ट्रकूट राजवंशों के शासन के दौरान, इन गुफाओं का निर्माण 6वीं और 10वीं शताब्दी सीई के बीच किया गया था। इन गुफाओं का एक महत्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व है और इन्हें प्राचीन भारत के सबसे प्रेरक आश्चर्यों में से एक माना जाता है।



अजंता की गुफाएं लगभग 29 गुफाओं का एक समूह है, जिनका निर्माण सातवाहन और वाकाटक के समय में किया गया था। गुफाएँ अपनी

शानदार बौद्ध वास्तुकला के लिए जानी जाती हैं और कुछ सबसे उत्तम भित्ति चित्र, पेंटिंग और मूर्तियों का घर हैं। गुफाओं को दो समूहों में बांटा गया है- हीनयान गुफाएं और महायान गुफाएं। हीनयान गुफाएँ वास्तुकला में सरल हैं और महायान गुफाओं की तुलना में आकार में अपेक्षाकृत छोटी हैं। महायान गुफाएँ बड़ी और अधिक विस्तृत रूप से जटिल मूर्तियों, चित्रों और भित्ति चित्रों से सजाई गई हैं। अजंता की गुफाओं के चित्र रोज़मर्रा के जीवन, जातक कथाओं की कहानियों और बुद्ध के जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं। इन चित्रों को भारतीय कला के बेहतरीन उदाहरणों में से एक माना जाता है और ये भारतीय चित्रकला की एक अलग शैली को दर्शाते हैं।



एलोरा की गुफाएँ लगभग 34 गुफाओं का एक समूह है जो अजंता की गुफाओं के निकट स्थित हैं। ये गुफाएँ हिंदू, जैन और बौद्ध

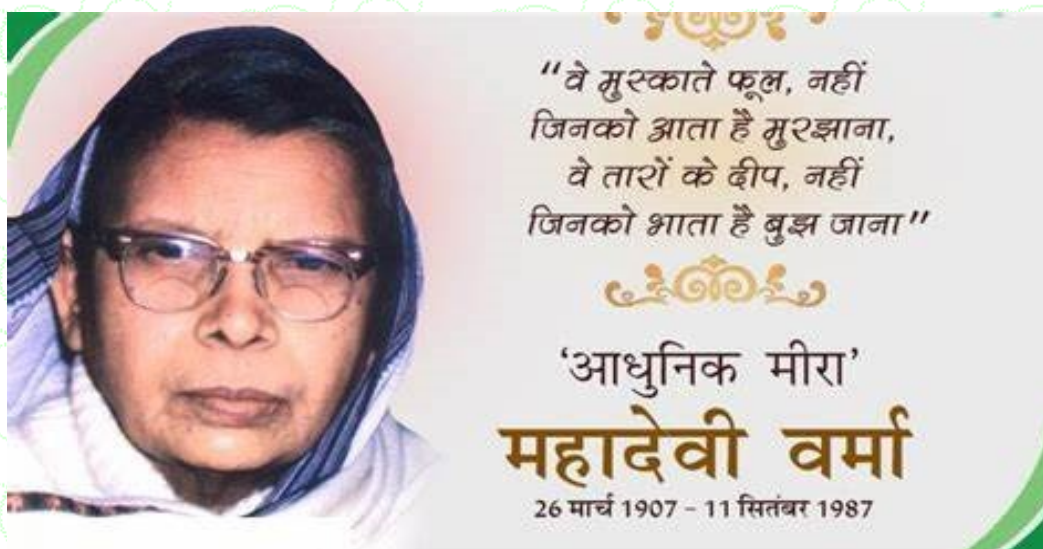
राँक-कट मंदिरों का मिश्रण हैं जो चालुक्य, राष्ट्रकूट और यादव राजवंशों के समय में बनाए गए थे।



ये मंदिर एक घाटी में स्थित हैं और 6वीं और 10वीं शताब्दी के दौरान फलने-फूलने वाली विभिन्न परंपराओं और संस्कृतियों के पिघलने वाले बर्तन का प्रतिनिधित्व करते हैं। एलोरा का सबसे प्रसिद्ध गुफा कैलाश मंदिर है, जो अपने शानदार वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध मंदिर भगवान शिव को समर्पित है और दुनिया की सबसे बड़ी अखंड संरचनाओं में से एक है। मंदिर को एक ही चट्टान से उकेरा गया है और इसका एक विस्तृत अग्रभाग है जिसे जटिल नक्काशी और मूर्तियों से सजाया गया है।

अजंता-एलोरा की गुफाएँ प्राचीन भारत के समृद्ध इतिहास और सांस्कृतिक विरासत का एक वसीयतनामा हैं। इन गुफाओं को यूनेस्को ने विश्व धरोहर स्थलों के रूप में घोषित किया है और सदियों से अनगिनत कलाकारों और विद्वानों को प्रेरित किया है। ये गुफाएँ एक महत्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक स्थल हैं जो दुनिया भर के पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता हैं। ये गुफाएँ न केवल प्राचीन भारतीय वास्तुकला और कला का एक वसीयतनामा हैं, बल्कि मानव आत्मा की लचीलापन और रचनात्मकता का एक महत्वपूर्ण अनुस्मारक भी हैं।

....श्री एस.श्रीनिवासन, वरिष्ठ अनुवादक, मदुरै



'संगीत कलानिधि' एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी

'कर्नाटक संगीत की कोकिला' कही जानेवाली मदुरै षण्मुगवडिवु सुब्बुलक्ष्मी का जन्म 16 सितंबर, 1916 को मदुरै (तमिलनाडु) के एक गरीब देवदासी परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री सुब्रह्मण्य अय्यर तथा माता का नाम श्रीमती षण्मुगवडिवु था। सुब्बालक्ष्मी के नाम में उनके जन्म-स्थान और माँ दोनों के नाम जुड़ गए। पहला शब्द जन्म-स्थान सूचक है और दूसरा शब्द उनकी माँ का परिचायक। घर में उन्हें सब 'कुंजम्मा' कहते थे। संगीत की दुनिया में वह 'एम. एस.' के नाम से ही प्रसिद्ध थीं।

सुब्बालक्ष्मी को संगीत विरासत में मिला था। उनकी दादी अक्कामिल वायलिन और माँ वीणा बजाने में प्रवीण थीं। घर में संगीत के वातावरण ने सुब्बालक्ष्मी पर गहरा प्रभाव डाला और बचपन में ही वह कर्नाटक संगीत से जुड़ गई।

सुब्बालक्ष्मी को संगीत की प्रारंभिक शिक्षा अपनी माँ से मिली। माँ ने ही उन्हें सुरों का ज्ञान कराया। किंतु संगीत के सुरों के साथ-साथ स्कूली शिक्षा भी जरूरी थी। अतः अन्य बच्चों के समान उन्हें भी स्कूल भेजा गया।

सुब्बुलक्ष्मी का परिवार मीनाक्षी मंदिर के समीप ही रहता था, जहाँ संगीत के विभिन्न गुरु अपने संगीत का जादू बिखेरते थे। यहाँ सिम्मनगुडी सीताराम, मदुरै श्रीनिवास अयंगर, अरियक्कुडि रामानुज अयंगर व मायावरम वी.वी.कृष्ण अय्यर आदि संगीतज्ञों के सुर सुनकर ही सुब्बुलक्ष्मी ने अपनी संगीत-साधना की। उन सभी ने इनकी कला को मुक्त कंठ से सराहा।

सुब्बुलक्ष्मी ने तेरह वर्ष की उम्र में पहली बार मंच पर कदम रखा। उन्होंने अपने मधुर और सुरीली आवाज में गाया तो सुननेवाले हतप्रभ रह गए। मद्रास उन दिनों कर्नाटक संगीत की राजधानी बन चुका था। कैरियर की खातिर सुब्बुलक्ष्मी सन् 1932 में अपनी माँ के साथ मद्रास गईं। वह उनके जीवन का महत्वपूर्ण वर्ष था, क्योंकि उन दिनों संगीत की दुनिया पुरुष-प्रधान थी। इसके बावजूद वहाँ सुब्बालक्ष्मी का सुनहरा सपना पूरा हो गया। सन् 1933 में फिल्म निर्देशक के.सुब्रह्मण्यम ने कुंभकोणम में सुब्बुलक्ष्मी का एक कार्यक्रम आयोजित किया। वहाँ उनका संगीत सुनने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। वहाँ मिली अपार सफलता के बाद उन्हें मद्रास की संगीत अकादमी में भी संगीत समारोह करने का अवसर मिला।

मद्रास सुब्बालक्ष्मी के लिए भाग्यशाली साबित हुआ। वहाँ से संगीत के क्षेत्र में उन्हें

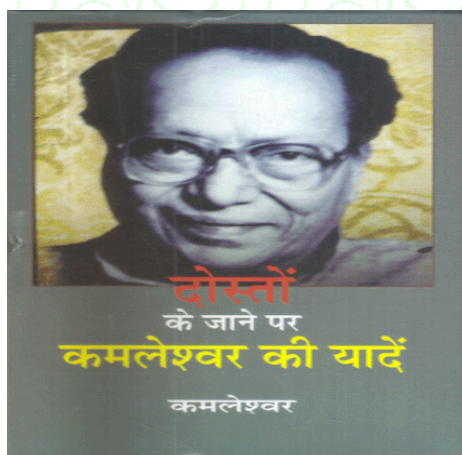
पहचान मिली, एक मार्गदर्शक व आदर्श पति मिला। सुब्बुलक्ष्मी ने 10 जुलाई, 1940 को तिरुनीरमलाई में सदाशिवम से प्रेम-विवाह कर लिया।

सन् 1945 में उनकी एक फिल्म 'भक्त मीरा' प्रदर्शित हुई। तमिल और हिंदी में एक साथ रिलीज हुई इस फिल्म में उन्होंने राजस्थानी संत कवयित्री मीराबाई की भूमिका निभाई। इस फिल्म की सफलता से वह पूरे भारत में एक भक्ति संगीतज्ञ के रूप में विख्यात हो गईं। सन् 1947 में इस फिल्म को हिंदी में पुनः निर्मित किया गया। फिल्म को राष्ट्रीय स्तर पर मिली बड़ी सफलता के बावजूद सुब्बुलक्ष्मी ने अपने फिल्मी कैरियर को अलविदा कह दिया और पूरी तरह संगीत को समर्पित हो गईं।

सुब्बुलक्ष्मी ने तमिल, तेलुगु, मलयालम, संस्कृत व हिंदी सीखने के लिए भी कड़ी मेहनत की थी। इसके अलावा वह उत्तर भारत की भाषाओं को भी सीखने लगी थीं। संगीत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान करने के कारण सन् 1954 में भारत सरकार द्वारा उन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि से विभूषित किया गया।

सुब्बुलक्ष्मी को सन् 1968 में चेन्नै की संगीत अकादमी ने 'संगीत कलानिधि' सम्मान से विभूषित किया। यह सम्मान प्राप्त करनेवाली वह पहली महिला थीं। इस सम्मान ने उन्हें संगीत विभूति बना दिया। सन् 1975 में भारत सरकार ने सुब्बुलक्ष्मी को 'पद्मविभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया। सुब्बुलक्ष्मी की प्रतिभा के कारण ही प्रसिद्ध व्यक्तियों ने उन्हें कई उपनाम दे दिए थे। पं. जवाहरलाल नेहरू उन्हें 'संगीत सम्राज्ञी' और पटियाला निवासी बड़े गुलाम अली उन्हें 'सुस्वरलक्ष्मी' कहते थे। संगीत सेवा के प्रति उनके समर्पण के कारण सन् 1998 में उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया।

सुब्बालक्ष्मी संगीत की सेवा करते-करते इतनी खो गई थीं कि उन्हें अपने बिगड़ते स्वास्थ्य का ध्यान ही नहीं रहा। 11 दिसंबर, 2004 को अपने प्राण त्याग दिए। तब उनकी आयु 88 वर्ष थी।



श्रीमती बी.वेनमाल, मुख्य टंकक, हिंदी अनुभाग

भाषा की जानकारी

हिंदी हमारी राजभाषा ही नहीं, बल्कि राष्ट्रभाषा भी है। हम तमिलनाडु से आगे कहीं भी जाएंगे, किसी भी राज्य के मार्ग पर जाने पर हमें अंग्रेजी से नहीं, हिंदी जानने पर ही हम किसी भी काम को आसानी से कर सकते हैं। ऐसे कुछ शब्दों को जो हमारे दैनंदिन के कार्यों में काम आता है उसे इधर दिया हूँ।

हिन्दी	English	தமிழ்
पूर्वाह्न	FORENOON	முற்பகல்
अपराह्न	AFTERNOON	பிற்பகல்
आज	TODAY	இன்று
आधी रात	MIDNIGHT	நள்ளிரவு
कल	TOMORROW/YESTERDAY	நேற்று, நாளை
क्षण, पल	SECOND, MOMENT	நொடி, கணம்
घंटा	HOUR	மணி
छमाही	HALF YEARLY	அரையாண்டு
तिमाही	QUARTERLY	காலாண்டு
दिन, दिवस	DAY	நாள், பகல்
दुपहर, दोपहर	NOON	நண்பகல்
पक्ष, पखवाडा	FORTNIGHT	இருவார
परसों	DAY BEFORE YESTERDAY/DAY AFTER TOMORROW	நேற்று முன்தினம், நாளை மறுநாள்
पूर्णिमा	FULL MOON	பொள்ளுமணி
प्रभात, तड़का	DAWN	அதிகாலை
सुबह, सबेरा, प्रातः	MORNING	காலை
महीना, मास, माह	MONTH	மாதம்
रात, रात्रि	NIGHT	இரவு
शताब्दी, शती, सदी	CENTURY	நூற்றாண்டு
शाम, संध्या, साँझ, सायंकाल	EVENING	மாலை
सप्ताह, हफ्ता	WEEK	வாரம்
सहस्राब्दी	MILLENNIUM	ஆயிரம் ஆண்டுகள்

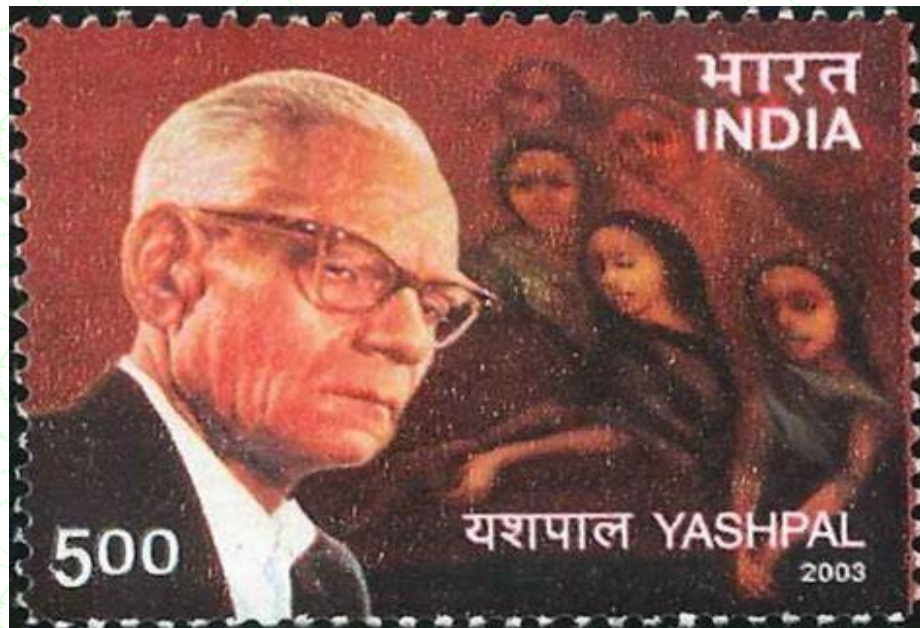
दिनों का नाम DAYS OF THE WEEK வார நாட்கள்		
हिंदी	English	தமிழ்
रविवार	SUNDAY	ஞாயிற்றுக்கிழமை
सोमवार	MONDAY	திங்கட்கிழமை
मंगलवार	TUESDAY	செவ்வாய்க்கிழமை
बुधवार	WEDNESDAY	புதன்கிழமை
गुरुवार	THURSDAY	வியாழக்கிழமை
शुक्रवार	FRIDAY	வெள்ளிக்கிழமை
शनिवार	SATURDAY	சனிக்கிழமை

ऋतु/मौसम SEASONS பருவகாலங்கள்		
हिंदी	English	தமிழ்
वसंत, बहार	SPRING	வசந்த காலம்
ग्रीष्म, गरमी	SUMMER	கடோடகைகாலம்
बरसात, वर्षा	RAINY	மழைக்காலம்
हेमंत	PRE WINTER	முன் பனிகாலம்
शिशिर, शरत्, शरद्, शीत, जाडा	WINTER	பனிகாலம், காளிர்காலம்
पतझड	AUTUMN	இலையுதிர்காலம்

.....శ్రీ

महीनों का नाम Names of months மாதங்கள்		
हिंदी	English	தமிழ்
जनवरी	JANUARY	ஜனவரி
फरवरी	FEBRUARY	பிப்ரவரி
मार्च	MARCH	மார்ச்
अप्रैल	APRIL	ஏப்ரல்
मई	MAY	மே
जून	JUNE	ஜூன்
जुलाई	JULY	ஜூலை
अगस्त	AUGUST	ஆகஸ்ட்
सितंबर	SEPTEMBER	செப்டம்பர்
अक्तूबर	OCTOBER	அக்டோபர்
नवंबर	NOVEMBER	நவம்பர்
दिसंबर	DECEMBER	டிசம்பர்

.....एस.प्रिंस डेविड जयसिंह,
कार्यालय अधीक्षक, कार्मिक शाखा, मदुरै









हिंदी विभाग, मदुरै मंडल - सहायक साहित्य - 76						
भाषायी विविधता में भाव की एकता Unity in linguistic diversity						
	मलयालम Malayalam	कन्नड़ Kannada	तेलुगु Telugu	तमिल Tamil	हिंदी Hindi	अंग्रेजी English
1.	Kuli कुली	Kooli कूलि	Kooli कुली	कुली	कुली	Cookie
2.	Katti कट्टी/कट्टे	maḥaḥ मऱऱ	Mincham मिनचम	कट्टुळु	कट	Cat
3.	Indi इन्दी/इन्दी	luṅṅaḥ लुङ्ग	Aḥam अहम	इन्दी	अदरक	Ginger
4.	Tala ताल	Tale तले	Thala ताल	तल	सिर	Head
5.	Kai कै	Kai कै	Cheyyi चैयि	कै	इया	Hand
6.	Onu ओनु	Ondu ओन्दु	Okani ओकनि	ओनु	एक	One
7.	Suryan सूर्यान	Sūrya सूर्या	Seerayala सीरैयल	सूर्या	रवि	Sun
8.	Itappetukula ఇతప్పెతుకూలు	itṭa ఇट्ट	Itṭam ఇट्ट	इट्ट	पसंद	Like
9.	Ruḍiḥimamurula రుడిహిమమూరు	ṛṛṇa ర్ṛ	Ruḍṇam రుడ	रुडु	कठिन	Difficult
10.	Ruḍi రుడి	Ruḍi రుడి	Ruḍi రుడి	रुड	स्वाद	Taste
11.	Santosham సంతోషం	santōṣa సంతోష	Santhosham సంతోషం	संतोष	प्रसन्न	Happy
12.	Karunam కరుణ	karuṇa కరుణ	Daya డయా	करुण	दया	Mercy
13.	Deeyam డియం	Kōḍa కోడా	Kopam కోపం	కాప	क्रोध	Anger
14.	Nakṣatram నక్షత్రం	nakṣatra నక్షత్ర	Nakṣatram నక్షత్రం	నక్షత్ర	सितारा	Star
15.	Ragam రాగం	Rāga రాగ	Ragam రాగ	राग	राग	Raga
16.	Rheer రీ	Rheer రీ	Rheer రీ	रि	खीर	Rheer
17.	Kurina కూరిన	Kurina కూరిన	Guram గురం	కురి	पूर	Horse
18.	At అత్	Māka మాక	Merka मेरका	మేరక	बकरी	Goat
19.	Kallan కల్ల	Kalla కల్లా	Dhonga ధంగా	ధంగా	खोर	Thief
20.	Kannati కన్నటి	kannati కన్నటి	Aḥimam అహిమ	కన్నటి	दर्पण	Mirror
21.	Vanam వనం	ṛṇa ర్ṛ	Adam అడం	అడ	जंगल	Forest
22.	Kurukkam కూరుక	Nari నారి	Nakka నక్క	నకి	जखरी	Fox
23.	Enna ఎన్న	enṇa ఎన్న	Noone నू	ఎన్న	तेल	Oil
24.	Rajav రాజ	Rāja రాజ	Raju రాజు	రాజ	राजा	King
25.	Mistryam మిస్ట్రీ	Mīru మీరు	Chepa చెప	చేప	मछली	Fish
हिंदी विभाग, मदुरै मंडल - सहायक साहित्य - 76						